असली
अमर-कथा
तोते
वाली
श्री अमरनाथ जी की गुफा का महात्म्

अमर-कथा

- <u>यह अमर कथा</u> — माता पार्वती तथा भगवान-शंकर का सम्वाद है। स्वयं श्री सदाशिव इस कथा के कहने वाले हैं।
- <u>यह अमर कथा</u> — प्राचीन धार्मिक-ग्रन्थों से ली गई है, जिनमें भृंगर्षि-संहिता, नीलमत पुराण और लावनी-ब्रह्मज्ञान उल्लेखनीय हैं।
- <u>यह अमर कथा</u> — लोक व परलोक का सुख देने वाली मानी गई है। स्वयं शिवजी द्वारा दिए गए वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धापूर्वक पढ़ने या सुनने वाला मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है।

- **प्रकाशक-**

  पुस्तक संसार
  १६७, नुमायश का मैदान, जम्मू–१८०००१

- **प्रमुख-विक्रेता-**

  सर्वश्री पुस्तक-संसार, बड़ा बाज़ार, हरिद्वार (उ॰ प्र॰)–२४६४०१
  सर्वश्री आर. बी. सेल्स, श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार
  (उ॰ प्र॰)–२४६४०१

- **सम्पादक-मण्डल-**

  श्री पं॰ ज्वालाप्रसाद जी 'चतुर्वेदी'
  श्री पं॰ राधेश्याम कौशिक
  श्री पं॰ वेणीराम शर्मा 'गौड़'

- **संकलन-स्रोत-**

  नीलमत पुराण, भृंगऋषि-संहिता, लावनी ब्रह्मज्ञान

- **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, 1/51, ललिता पार्क,
  लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92

- मूल्य: 25/- रु.

अनुक्रम

श्री अमरनाथ की गुफा का रहस्य.........

माता पार्वती को अमरकथा सुनाने के लिए, श्री शंकर जी ने, अमरनाथ की गुफा को ही क्यों चुना ? इसके पीछे भी एक रहस्य है–

युगों पहले, जब पार्वती के मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि शंकर जी ने अपने गले में मुण्डमाला क्यों और कब धारण की है, तो शंकर जी ने उत्तर दिया कि– हे पार्वती! जितनी बार तुम्हारा जन्म हुआ उतने ही मुण्ड मैंने धारण कर लिए। इस पर पार्वती जी बोलीं कि मेरा शरीर नाशवान है, मृत्यु को प्राप्त होता है, परन्तु आप अमर हैं, इसका कारण बताने की कृपा करें। भगवान शिव ने रहस्यमयी मुस्कान भरकर कहा– यह तो अमरकथा के कारण है।

ऐसा सुनकर पार्वती के मन में भी अमरत्व प्राप्त कर लेने की इच्छा जागृत हो उठी और वह अमर कथा सुनाने का आग्रह करने लगीं। कितने ही वर्षों तक शिवजी इसको टालने का प्रयत्न करते रहे, परन्तु पार्वती के लगातार हठ के कारण उन्हें अमरकथा को सुनाने के लिए बाध्य होना पड़ा। .... परन्तु, समस्या यह थी कि कोई अन्य जीव उस कथा को ना सुने। अतः किसी एकान्त व निर्जन स्थान की खोज करते हुए श्री शंकर जी, पार्वती सहित, इन पर्वत-मालाओं में पहुँच गए।

प्राचीन-कथा में उल्लेख है कि इस "अमर-कथा" को सुनाने से पहले भगवान् शंकर यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि कथा निर्विघ्न पूरी की जा सके, कोई बाधा न हो तथा पार्वती के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी उसे न सुन सके। उचित एवं निर्जन-स्थान की तलाश करते हुए वे सर्वप्रथम **"पहलगाम"** पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने नन्दी (बैल) का परित्याग किया। वास्तव में इस स्थान का प्राचीन नाम बैल-गांव था,

जो कालान्तर में बिगड़कर तथा क्षेत्रीय भाषा के उच्चारण-प्रभाव से पहलगाम बन गया।

तत्पश्चात् ''**चन्दनबाड़ी**'' में भगवान् शिव ने अपनी जटा (केशों) से चन्द्रमा को मुक्त किया। ''**शेषनाग**'' नामक झील पर पहुँच कर उन्होंने, अपने गले से सर्पों की मालाओं को भी उतार दिया। सम्भवतः इसी कथा के आधारभूत शेषनाग-पर्वत पर नागों की आकृतियाँ विद्यमान हैं। हाथी के सिर व सूंड वाले प्रिय-पुत्र, श्री गणेश जी, को भी उन्होंने ''**महागुनस-पर्वत**'' पर छोड़ देने का निश्चय किया। इस स्थान का प्राचीन एवं शुद्ध उच्चारण महा-गणेश था, जो धीरे-धीरे, सम्भवतः काश्मीरी भाषा के प्रभाव से, महागुनस हो गया। फिर–

''**पंचतरनी**'' नामक स्थान पर पहुँच कर शिव ने पंच-तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) का परित्याग कर दिया। भगवान् शिव इन्हीं पंच-तत्वों के स्वामी माने जाते हैं जिनको उन्होंने, श्री अमरनाथ गुफा में प्रवेश से पहले ही, छोड दिया था। इसके पश्चात् ऐसी मान्यता है कि शिव-पार्वती ने इस पर्वत-श्रृंखला में ताण्डव-नृत्य किया था। ताण्डव-नृत्य, वास्तव में सृष्टि के त्याग का प्रतीक माना गया।

सब कुछ छोड़छाड़ कर, अन्त में भगवान् शिव ने श्री अमरनाथ की इस गुफा में, पार्वती सहित प्रवेश किया और मृगछाला बिछाकर पार्वती को अमरत्व का रहस्य सुनाने के लिए ध्यानमग्न होकर बैठ गए। लेकिन इससे पहले उन्होंने कालाग्नि नामक रूद्र को प्रकट किया और आज्ञा दी–''चहुँ ओर ऐसी प्रचण्ड-अग्नि प्रकट करो! जिसमें समस्त जीवधारी जल कर भस्म हो सकें'' कालाग्नि ने ऐसा ही किया। अब सन्तुष्ट होकर शिव ने अमरकथा कहनी शुरू की. .....परन्तु उनकी मृगछाला के नीचे, तोते का एक अण्डा* फिर भी बच गया था, जिसने अण्डे से बाहर आकर ''अमरकथा'' को किस प्रकार सुन लिया? फिर आगे क्या हुआ? (पृष्ठ नं. ६ पर इसी पुस्तक में पढ़ें)।

* अण्डा भस्म नही हुआ, इसके दो कारण थे। एक तो मृगशाला के नीचे होने से शिव की शरण पा गया। दूसरे, अण्डा जीवधारियो की श्रेणी मे नही आता, अतः कालाग्नि के प्रभाव से बचा रहा।

अमर-कथा की महिमा

अमरनाथ ने अमरकथा जब कही, सुनी थी पारवती
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे हैं कैलाशपति
अविनाशी कैलाशी काशी उत्तराखण्ड में बसाई
बैठ गुफा में गौरि को अमर कथा जब सुनाई
अमृत-वाणी सुनी उमा के नेत्र में निद्रा भरि आई
वही कथा फिर एक तोते के बच्चे ने सुनि पाई
दिया हुंकारा शिवजी को शिव कहें अर्थ कर समुझाई
सुआ सुनता था औ' वहीं सोती थीं गौरां माई
पारब्रह्म का खेल हुआ पर उस तोते की बढ़ी रती
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे हैं कैलाशपति
हुई कथा सम्पूरण शिव ने पार्वती को बुलाया

उठीं गौरजा कह शिव मैंने कुछ नहीं सुन पाया
फिर शिवजी ने कहा हुंकारा किसने मुझको सुनाया
और तीसरा यहाँ पर कौन विधि करके आया
चढ़ा क्रोध शिव शंकर को कर से त्रिशूल को उठाया
उसी वक्त फिर वह तोते का बच्चा उठके धाया
दौड़े शिव उसके पीछे वह निकल गया कर सुमतमती
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे हैं कैलाशपति
तीन लोक में उड़ा वह तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना
उड़ते-उड़ते बहुत सा अपने मन में घबड़ाना
पतिव्रता थी खड़ी करे स्नान उसी को पहिचाना
दौड़ के तोता जाय फिर उसके मुख में समाना
वहाँ किसी का ज़ोर चले नहीं क्यों कर हो उसका पाना

फिर शिवजी ने दिया वरदान कहा ये है स्याना
वही हुए शुकदेव व्यास के पुत्र बड़े भये यती सती
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे हैं कैलाशपति
अमर कथा का बड़ा महातम है जो कोई सुनने जावे
श्रवण किये से होय वह अमर नहीं मरने पावे
चार वेद षट्शास्त्र अठारह पुराण सब इसमें आवें
अमर कथा को आप शुकदेव सदा मुख से गावें
वह पण्डित हैं बड़े कि जो कोई अमर कथा को सुनावें
और दूसरे बोल नहीं कुछ मेरे मन में भावें
उस दिन शिव ने कही कथा थी कौन बार तिथि कौन हती
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे हैं कैलाशपति।

श्री अमरनाथ की अमरकथा

इस कथा का नाम अमर कथा इसलिए है कि इसके श्रवण करने से शिवधाम की प्राप्ति होती है। यह वह परम पवित्र कथा है जिसके सुनने से सुनने वालों को अमरपद की प्राप्ति होती है तथा वह अमर हो जाते हैं। यह कथा श्री शंकर भगवान ने इसी गुफ़ा में (श्री अमरनाथ जी की गुफ़ा में) भगवती पार्वती जी को सुनाई थी। इस कथा को सुनकर ही श्री शुकदेवजी अमर हो गये थे। जब भगवान श्री शंकर यह कथा भगवती पार्वती को सुना रहे थे तो वहां एक तोते का बच्चा भी इस परम पवित्र कथा को सुन रहा था और इसे सुनकर फिर उस तोते के बच्चे ने श्री शुकदेव स्वरूप को पाया था। 'शुक' संस्कृत में तोता को कहते हैं और इसी कारण बाद में फिर मुनि 'शुकदेव, के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए। यह कथा भगवती पार्वती तथा भगवान शंकर का संवाद

है। यह परम-पवित्र कथा लोक व परलोक का सुख देने वाली है। शंकर भगवान और जगतमाता के इस सम्वाद का वर्णन भृगु-संहिता, नीलमत-पुराण, तीर्थ संग्रह आदि ग्रन्थों में पाया जाता है। हम यहाँ पर आपके सम्मुख यह परम पवित्र कथा विस्तार-पूर्वक रखेंगे।

देव-ऋषि नारद का कैलाश पर्वत पर आना और श्री पार्वतीजी से पूछना कि भगवान शंकर के गले में रूण्डमाला क्यों है?

एक बार देव-ऋषि नारद कैलाश पर्वत पर भगवान श्री शंकर के स्थान पर दर्शनार्थ पधारे। भगवान श्री शंकर उस समय वन विहार के लिए गये हुए थे और भगवती पार्वती यहाँ पर विराजमान थीं। श्री पार्वतीजी ने देव-ऋषि नारद को प्रणाम किया और सादर आसन दिया। और बोली-'देव-ऋषि ! आपने यहाँ पधार कर हम पर बड़ी कृपा की, अपने आने का कारण कहिए।'

देव-ऋषि नारद बोले—"देवी ! मेरा एक प्रश्न है उसका उ त्तर चाहता हूँ।"

श्री पार्वतीजी ने कहा—"कहिए ?"

नारद बोले—"देवी ! मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य है भगवान श्री शंकर, जोकि हम दोनों से बड़े हैं, उनके गले में रुण्ड माला क्यों है ?

श्री पार्वतीजी बोली—"इसका कारण मैं नहीं जानती।"

नारद जी ने कहा—"आप यथासमय इसका कारण भगवान श्री शंकर से पूछियेगा।"

इतना कहकर देव-ऋषि नारद वहाँ से चले गये और उनके जाने के थोड़ी देर बाद भगवान श्री शंकर आ गये और उनके आने पर भगवती पार्वती ने वही प्रश्न उनसे किया।

भगवान श्री शंकर बोले—"हे पार्वती ! तुम यह प्रश्न न पूछो।"

लेकिन श्री पार्वतीजी ने भगवान श्री शंकर की बात नहीं मानी और उनके रुण्डमाला धारण करने का कारण जानने के लिए हठ करने लगीं। इस पर भगवान श्री शंकर ने कहा—"पार्वती ! जितने मुण्ड तुमको इस मुण्डमाला में दिखाई दे रहे हैं यह तुम्हारे ही सिर हैं, यानी जितने जन्म तुमने धारण किए हैं उतने ही मुण्ड मैंने धारण किए हैं।"

इस पर पार्वती जी ने प्रश्न किया—"प्रभो ! मेरी तो मृत्यु होती है और आपकी नहीं होती इसका कारण क्या है?"

भगवान श्री शंकर बोले—"यह सब अमर कथा के कारण है?"

पार्वती बोली—"तो फिर मुझे भी यह अमर कथा सुना दीजिए ना।"

इस पर श्री शंकर जी ने आसन लगाया और कालाग्नि रुद्र नामक एक गण प्रकट किया और उसे आज्ञा दी—"चहुँ ओर एक ऐसी अग्नि प्रगट करो जिसमें कि जलकर समस्त जीवधारी मर जावें।"

श्री शुकदेव का जन्म

भगवान शंकर की आज्ञा पाकर कालाग्नि ने ऐसा ही किया और अदृश्य हो गया। जिस आसन पर भगवान श्री शंकर बैठे थे उसके नीचे एक तोते का अण्डा पहिले से ही था जो कि कालाग्नि को दिखाई नहीं दिया। इसके पश्चात् भगवान श्री शंकर नेत्र मूंद कर, एकाग्रचित हो पार्वती जी को अमर कथा सुनाने लगे और पार्वती जी उनके हर वाक्य पर हुंकारा भरने लगीं। धीरे–२ पार्वती जी को नींद आने लगी। उसी समय उस अण्डे में से जीव प्रकट हुआ। श्री पार्वतीजी तब तक हुंकारा देते-देते सो चुकी थी। अब उसके स्थान पर तोता हुंकारा देने लगा। जब भगवान शंकर अमर कथा समाप्त कर चुके तो श्री पार्वतीजी की आँखें भी खुलीं। भगवान श्री शंकर ने उनसे पूछा कि क्या– उन्होनें अमर

कथा सुनी है ? श्री पार्वती ने उत्तर दिया कि अमर कथा नहीं सुनी। इस पर भगवान श्री शंकर ने पूछा—"तब हुँकारा कौन देता था?"

पार्वती जी बोली—'मुझे नहीं मालूम।'

तब भगवान श्री शंकर ने इधर-उधर देखा तो उनको एक तोता दिखाई दिया जो कि उनके देखते ही देखते उड़ गया। भगवान शंकर उठकर पीछे दौड़े। वह तोता उड़ता-उड़ता तीनों लोकों में गया लेकिन उसको कहीं जगह नहीं मिली। श्री व्यासदेव की पत्नी अपने घर के द्वार पर बैठी जम्हाई ले रही थी, बस तोता उनके पेट में चला गया। भगवान श्री शंकर ने कहा—'व्यास जी मेरा चोर आपके घर में है।'

महर्षि व्यास बोले— 'प्रभो ! हमारे घर में तो कोई चोर नहीं है।'

भगवान श्री शंकर के कहने पर महर्षि व्यास जी ने अपनी पत्नी से

पूछा। उसने उत्तर दिया–"ऐसा जान पड़ता है जैसे कि मेरे पेट में कोई पक्षी गया है।"

महर्षि व्यास जी ने यह बात भगवान श्री शंकर से कही और साथ ही कहा –'आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कर सकते हैं। लेकिन यह तो आप जानते ही हैं कि स्त्री को मारना पाप है।'

श्री वेदव्यास की यह बात सुनकर श्री शंकर लौट गये। वह तोता कई वर्षों तक ऋषि-पत्नी के पेट में रहा। लेकिन जब ऋषि-पत्नी के पेट का कष्ट अधिक बढ़ता गया तो श्री वेद व्यास जी ब्रहमाजी और उसके पश्चात् श्री विष्णु के पास गये। फिर तीनों मिलकर भगवान श्री शंकर के पास गये। इसके पश्चात् चारों श्री वेदव्यासजी के स्थान पर आए और पक्षी की स्तुति करने लगे। पक्षी, जो भगवान श्री शंकर जी से अमर कथा सुनकर चारों वेदों तथा अठारह पुराणों का ज्ञानी हो गया

था, कहने लगा–"अब तक जगत निर्मोही नहीं होगा, तब तक मैं मां के पेट से बाहर नहीं निकलुंगा।" इस पर भगवान विष्णु ने अपनी माया से जगत को निर्मोही कर दिया। इस पर वह तोता बालक रूप होकर मां के पेट से बाहर आ गया और उसका नाम शुकदेव हुआ। श्री शुकदेव अपने जन्म के साथ ही सबको प्रणाम करके जंगल की ओर चल दिये और फिर भगवान विष्णु ने अपनी माया हटा दी और जगत पुन: मोहयुक्त हो गया। इस पर श्री वेदव्यास जी अपने पुत्र के लिए व्याकुल होकर श्री शुकदेव के पीछे जंगल में दौड़े और उनके पास पहुँचकर उसने घर चलने के लिए कहा। श्री शुकदेव जी ने कहा –"जगत निर्मोही है। यहाँ न कोई किसी का पुत्र है और न कोई किसी का पिता।"

श्री वेदव्यास जी बोले –'अब ऐसा नहीं है।'

श्री शुकदेवजी ने ध्यान लगा कर देखा तो मालूम हुआ कि भगवान

श्री विष्णु ने उनके साथ छल किया है। इस पर उन्होनें श्री वेदव्यास जी से कहा–

जब तक मैं गुरु धारण नहीं कर लूंगा, वापिस घर नहीं जाऊंगा और गुरु धारण करने के बाद मैं घर आकर आपकी सेवा करूंगा।

श्री शुकदेव का महाराज जनक को गुरु धारण करना

शुकदेव जी फिर इस संसार में गुरु की खोज में इधर-उधर घूमने लगे। मगर अपने से बढ़कर ज्ञानी उनको कहीं पर नहीं मिला। इस पर वह श्री वेदव्यासजी की आज्ञा से महाराज जनक ने पास गये। लेकिन महाराज जनक के पास कर्म, स्त्री व राजपाट के कारण उनको ग्लानि हुई। लेकिन राजा जनक ने जब उनका यह हाल देखा तो अपनी माया से उन्होंने सारे नगर को भस्म कर डाला, राजभवन भी भस्म होने लगा, लेकिन राजभवन के जलने से महाराज जनक और पत्नी का चित्त

चलायमान नहीं हुआ। किन्तु श्री शुकदेव जी का चित्त व्याकुल होने लगा। शुकदेव जी को अमर कथा के सुनने तथा अपने अमर हो जाने का अभिमान था। उनकी व्याकुलता को देखकर महाराज जनक बोले – "आप क्यों घबरा रहे हैं ? आप तो अमर हैं। लेकिन हमारा शरीर अवश्य जलेगा" इस पर भी जब श्री शुकदेव जी की व्याकुलता दूर न हुई तो महाराज जनक ने अपनी माया से अग्नि पुनः शान्त कर दी और प्रत्येक वस्तु पूर्ववत् हो गई। यह देख कर श्री शुकदेव जी ने महाराज जनक को अपना गुरु बना लिया और उनसे उपदेश लिया।

इसके बाद श्री शुकदेव जी नैमिषारण्य गये। वहां पर ऋषियों-महा-ऋषियों ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। ऋषियों-महर्षियों ने आपसे अमर कथा सुनाने के लिए प्रार्थना की। श्री शुकदेव जी बोले इस कथा के सुनने वाले अमर हो जाते हैं। इसके पश्चात् उन्होंने कथा

सुनानी आरम्भ की। कथा आरम्भ होने के साथ ही कैलाश-पर्वत, क्षीरसागर और ब्रह्मलोक हिलने लगे। ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा समस्त देवता उस स्थान पर पहुँचे जहां पर अमर कथा हो रही थी। भगवान शंकर को स्मरण हुया कि यदि इस कथा के सुनने वाले अमर हो गये तो पृथ्वी का संचालन बन्द हो जायेगा और फिर देवताओं की प्रतिष्ठा में अन्तर आ जायेगा। इसलिए भगवान श्री शंकर क्रोध में भर आये और श्राप दिया कि जो इस कथा को सुनेगा वह अमर नहीं होगा, परन्तु हां, वह शिव-लोक अवश्य प्राप्त करेगा।'

****

अमर-कथा प्रारम्भ

श्री पार्वती जी ने कहा–

आधुना श्रोतुमिच्छामि यात्राअमरनाथायाम। यां श्रुत्वा मुच्यते जन्तुर्जन्मान्तरकृतैरवैः।।
पुनश्च रसलिङ्गस्य माहात्म्य वक्तुमर्हसि। अंग भूतानि तीर्थानि यान्यत्र जगदीश्वर।।
तत्पूजा तद्विधिश्चैव वनस्व दयया प्रभो। यात्रामकृत्वा देवस्य यो लिंग पश्यति प्रभो।।
सः का गति प्रयातीह वदं शीघ्र दयानिधे।

प्रभो! मैं अमरनाथ की यात्रा की महिमा सुनना चाहती हूँ, जिसके सुनने से जन्म जन्मान्तर के पाप-ताप मिट जाते हैं। जगत स्वामिन्! आप श्री अमरनाथ जी के लिंग का महात्म्य तथा मार्ग के तीर्थों का वर्णन कीजिए। श्री अमरनाथ की यात्रा तथा पूजन की विधि भी कहें और यह भी बतायें कि जो शास्त्रोक्त यात्रा को त्यागकर केवल लिंग के ही दर्शन करता है वह किस गति को प्राप्त होता है?

भगवान श्री शंकर ने कहा–

यात्रामअमरनाथस्य कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात्। बाह्याभ्यन्तरशुद्धस्तु रसलिंगस्य दर्शने।।
चतुवर्गफलादानम् क्षमो भवति पुरुषः। यात्रान्तः प्राप्यतीर्थोंधर्मनासेव्यतु यो नरा।।
वेयात्यमरक्षेत्रेऽपि तस्य यात्राऽऽफला भवेत्।

मनुष्य श्री अमरनाथ जी की यात्रा करके शुद्धि को प्राप्त करता है तथा शिवलिंग के दर्शनों से भीतर बाहर से शुद्ध होकर धर्म, अर्थ, काम वचन तथा मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। वह मनुष्य जो कि मार्ग के तीर्थों पर यथाविधि स्नान दान इत्यादि न करके सीधा गुफा ही में पहुंच जाता है उसकी यात्रा निष्फल समझो।

ऊर्ध्वाऽधोगमनाद्देवि ! द्विधा यात्रा प्रदर्शिता। ऊर्ध्वयात्रा मुमुक्षूणां प्राणायेन योगिनाम।।
अपानप्राणयोरैक्ये राजमार्गेण वै गते। ब्रह्मद्वारविलीनेऽत्र मुक्तिर्भवति निश्चिता।।
यथेष्टकामदा यात्रा द्विधा सेव्या फलेप्सुभिः। बाह्यऽधोयात्रया पाप-क्षये शुद्धः पुमान्यदा।।
अधिकारी भवेत् सद्यः हठराजादियोगतः। तीर्थेऽमरकथां श्रुत्वा शिवप्रोक्तां मनीषितः।।
तदुक्तमार्गयो यः स्यादमरो निश्चितं भवेत्। तत्रादौ संप्रवक्ष्यामि अधोयात्रञ्च पुण्यदानम।।

भगवान शंकर बोले-

''हे देवी ! दो प्रकार की ऊपर तथा नीचे की यात्रा है। ऊर्ध्व(ऊपर) की यात्रा मोक्ष चाहने वाले योगियों को प्राणायाम द्वारा होती है। प्राण तथा अपान वायु के एक होने पर योग-मार्गे दशम द्वार अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में प्राणों को लीन करने से निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह दोनों प्रकार की यात्रा धर्म-अर्थ काम तथा मोक्ष के इच्छुकों को करनी चाहिए। प्रभो! (निचली) यात्रा यानी पैदल यात्रा से मनुष्यों के सम्पूर्ण पाप दूर होकर चित्त निर्मल हो जाता है। और इसी तरह हठयोग और राजयोग से तीर्थ पर किसी अच्छे विद्वान पंडित द्वारा अमर कथा सुनने से पुरुष ज्ञान-अधिकारी हो जाता है। इस तरह कहे गये के अनुसार यात्रा करने वाले मुक्ति को प्राप्त करते हैं। अतः पुण्य देने वाली निम्न यात्रा का वर्णन किया जाता है।

श्रीपुरे गणपति नत्वा संकल्पयैव ससार्थकः । सांप्रदायिकरीत्या वै चतुष्कादौ शिवं भजन् ।।
निर्गत्य नगरादादौ तीर्थे षोड़शसंज्ञके । स्नात्वा शिवपुरं गच्छेदुषपृश्य ततः परम् ।।

श्रीनगर में विघ्नों का नाश करने वाले श्री गणेश जी की पूजा करे। रीति के अनुसार भगवान श्री शंकर का स्मरण करता हुआ, वहां से बाहर निकल कर षोडश तीर्थ पर स्नान तथा आचमन करके शिव की ओर बढ़े।

पुण्ये गंगाम्भिसि स्नात्वा पद द्रष्टौ प्रणतः प्रिये । तत्राचर्येन्महादेवं तर्पयिद्भोजयेत्तथा ।।
देवनृषीन् द्विजान्हेमगोवस्त्रान्न विसर्जयित् । ततः पद्मपुरे सिद्धक्षेत्र स्नात्वाऽग्रतो ब्रजेत् ।।
वारिशे रुद्र-गंगाख्ये स्नात्वा दस्वाब्रजेत्ततः । युवत्यां तत्र मिष्टोदे स्नात्वोऽथावन्तिकां श्रयेत् ।।

प्रिय ! वहां गंगाजी का दर्शन और प्रणाम करके भगवान श्री शंकर पूजन, देवता और ऋषियों का तर्पण वा ब्राह्मणों को भोजन करवायें। फिर अन्न, वस्त्र आदि दान देकर विसर्जन करें। फिर पद्मपुर में जो सिद्धों का है वहां पर स्नान करके और दान देकर युवती तथा मिष्टो (मिठव) तीर्थों पर स्नान करके अवन्तीपुर (बाँतीपुर) को चलें।

तत्रस्नात्वा सिद्धक्षेत्र महानागं समाश्रयेत्। हरिद्राख्यं गणपति नत्वा विघ्नेश्वरार्चनम्।।
कृत्वा देवानृषीन पितृस्तर्पयेद्विधिवन्नरः। हव्यकव्यादिभिः सर्वे विघ्नाः पापनि च प्रिये।।
तत्क्षणान्नाशमायान्ति गणनाथप्रसादतः। बलिहारे ततोऽपायात् क्षेत्रे स्नात्वा व्रजेत्ततः।।

वहां साधु-महात्माओं के क्षेत्र में स्नान करके बहन्नाग(मिहरनाग) जाकर हरी पांरा गांव में हरिदाख्य गणपति विघ्नों के नाश करने वाले श्री गणेश जी का पूजन करे और देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें। देवताओं तथा पित्रों का तर्पण करने से तथा दान करने से श्री गणेश की कृपा से मनुष्य के समस्त विघ्न तथा पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद बलिहार क्षेत्र(बहियार-ग्राम) में स्नान करके आगे बढ़े।

ज्येष्ठाषाढं महादेवं पूजयेद्गणनायकम्। नागाश्रमे हस्तिकर्णे नत्वोपस्पृश्य च व्रजेत।।
स्नात्वोपस्पृश्य वा वारि तदीयं त्रिमलापहम्। ततो गच्छेचक्रतीर्थे स्नात्वा देवर्षितर्पणम्।।
तत्र कृत्वाहेममयं चक्रं दद्याद् द्विजन्मने। हुत्वा जप्त्वा च विधिवद् व्रजेदेवकतीर्थकम्।।

नागाश्रम (बागहाँन) में, जिसको कि हस्तिकर्ण कहते हैं, संगम के

समीप जाकर ज्येष्ठाषाढ़ नामक गणस्वामी भगवान श्री सदाशिव का पूजन करके आगे चलें। तीनों तापों तथा मलों का नाश करने वाले तीर्थ जल में स्नान व आचमन करके चक्र नामक तीर्थ (चक्रधर) पर जाकर स्नान करके देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें और सोने का चक्र बना कर ब्राह्मण को दान देवें। फिर विधिवत् हवन तथा जप करके देवें। फिर विधिवत् हवन तथा जप करके देवक तीर्थ (देवकयार) की ओर चलें।

तत्र स्नात्वा हरिश्चन्द्रं तीर्थपुण्यं समाश्रयेत् । तत्र स्नात्वार्चयेद्देवं महादेव वृषभध्वजम् ।।
देवानृषीन पितृश्चैव तर्पयेहव्यकव्यकै: । गां हिरण्यंतिलानवस्त्रं भक्ष्यंभोज्यं च शक्तिः ।।
दद्यांन्यात्रेषु ब्रह्माण्डं तर्पितंतेन सम्भवेत् । ततो भुक्त्वा च देवेशि तीर्थ तत्वा सुरेश्वरि ।।
तत्र लम्बोदरी वारि स्नान कुर्यादतन्द्रित: । स्थलवाटं ततो गच्छेत्तत्रस्नात्वामृष्ठुती ।।
ततो ब्रजेत सूर्यस्य गुहावटं सुरेश्वरी। सूर्याश्रमे सूर्यगंगामवगाह्य समर्चयते ।।

और फिर वहां स्नान करके हरिश्चन्द्र तीर्थ (विजय विहार) बीज बिहारा पहुँच कर स्नान करें तथा वृषभध्वज महादेवजी का पूजन कर हव्य कव्य

आदि से देवताओं और ऋषियों का तर्पण करें। गऊ, स्वर्ण, तिल और भोजन यथाशक्ति सत्पात्र ब्राह्मण को दान देवें। ऐसा करने से मनुष्य को ब्राह्मण को तृप्त करने के फल की प्राप्ति होती है। हे देवी ! इसके पश्चात भोजन करे और तीर्थ को नमस्कार करके आगे चले और लम्बोदरी नदी पर आलस्य रहित होकर स्नान करके थुजवार ग्राम से भगवान श्री सदाशिव के दर्शन करें। इसके बाद सूर्य क्षेत्र (मार्तण्ड भवन-मटन) में सूर्य कुण्ड (सूर्य गंगा) में स्नान करके भगवान भास्कर का दर्शन करें।

श्री सूर्यनारायण का पूजन

भूक्ति मुक्तप्रदं सूर्य-गामश्वं कनकं तथा। अन्नादि वसनीयानि द्विजेभ्य: प्रतिपानयेत।।
सूर्यक्षेत्रन्तु पितृणां दुखितानां स्वकर्मत:। तेषामुद्धारणार्थाय प्रार्थितं मुनिभि: सुरै:।।
तत्र कुय्र्याततित्पतृंमुक्तिं पिण्डैदानादिभि: प्रिये। कुण्डद्वयं समालोक्य मत्स्यरूपानसुरानपि।।
अन्नैर्नानाविधैभक्तया स्नात्वा तृप्तान् विधायऽतान् ! श्राद्धं पश्चिमवाहिन्यां तत्र कुय्र्याद्धि मानव:।।

श्री सूर्यनारायण के दर्शन कर के तथा उनका पूजन करें। भगवान

श्री सूर्यनारायण का पूजन संसार के समस्त भोगों तथा मुक्ति को देने वाला है यात्रियों को सूर्य-क्षेत्र में अन्न वस्त्र आदि का दान ब्राह्मणों को देना चाहिए यह सूर्य-क्षेत्र (मटन) तीर्थ अपने कर्मों से दुखी हुए पितरों के उद्धार के लिए उत्तम है,ऐसा देवताओं का ऋषियों-महर्षियों का मत है। हे देवी ! यहां पर पिण्डदान आदि से पितरों का उद्धार करें। दोनों कुन्डों का दर्शन करें और फिर उनमें मत्स्य रूप देवताओं का दर्शन कर और फिर उनको नाना मन्त्रों से तृप्त करें। पश्चिम-वाहिनी गंगा में स्नान करके पितरों के उद्धार के लिए श्राद्ध करें।

ततः सत्कारमासाद्यः स्नात्वा तत्तीर्थ वारिणि। सम्पूज्य चात्र गणय ब्रजे-द्भद्राश्रमं ततः।।
हयशीर्षाश्रमे पुण्ये तथा स्त्रश्वतरनागजे। सौरगंगा जले स्नात्वा कृतनित्य क्रियाद्विजाः।।
गच्छेत्सरलके ग्रामे जलेऽनन्तस्यापावने। तत्र स्नात्वा ततो गच्छेत् बालकल्यायन परम्।।

इसके बाद सत्कार (साकरस) स्थान में पहुँचे, स्नान करें और श्री गणेश का पूजन करें और फिर भद्राश्रम में जायें। फिर परम पवित्र हयशीर्ष

(सिलगाम) आश्रम में तथा स्त्रश्वतर क्षेत्र में और गंगाजल में स्नान करके संध्या वंदन आदि नित्य-क्रिया करें।

(सरलक सलर) ग्राम में पहुँच कर पवित्र अनन्तनाग तालाब के जल में स्नान कर उत्तम बालखिल्य आश्रम (ख्यिलन) को जाना चाहिए।

बालखिल्य तीर्थ का महात्म्य

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम्। बालखिल्यायन्स्यैव चित्तशुद्धकरं परम्।।
पुरामहर्षय: सिंद्धा: बालखिल्यामिधा: शिवे। सुदुष्करं तपश्चेरु: नियमेनोर्ध्वरितस:।।

हे देवी! अब मैं पाप ताप को हरने वाले तथा चित्त को शुद्ध करने वाले बालखिल्य तीर्थ का महात्म्य कहता हूँ। ध्यानपूर्वक सुनो। पूर्वकाल में बाल-खिल्य नामक महर्षियों ने घोर तप किया।

उवाच तां तदा विष्णुर्मेघगम्भीरया गिरा। तपसानेन तुष्टोरस्मि दरयेध्वं वरं शुभम्।।
श्रुत्वा तेषां वच: सौम्यमानन्दाश्रु परिलुप्त:। दृष्टि पदो: समाधाय गंगा समुदचालयत्।।

फिर भगवान श्री विष्णु ने मेघ सदृश गंभीर वाणी से कहा मैं तुम्हारे तप से अत्यधिक प्रसन्न हूँ अतः तुम वर मांगो।

ऋषियों की प्रार्थना सुनकर भगवान श्री विष्णु ने अपने चरणों से धरती को छूकर वहां से गंगा को प्रकट किया।

आभूतसंप्लवं यावत्तावत्परमपावनम्। बालखिल्यामिधं तीर्थं भविष्यन्ति न संशयः।।

भ्रियते धूतपापः सन् स्वर्गलोके महीयते। खिल्याने महापुण्ये विष्णोस्तीर्थेह्यनुत्तम।।

और उसके साथ ही उन लोगों को यह वरदान भी दिया कि प्रलय पर्यन्त बालखिल्य तीर्थ लोगों को पवित्र करता रहेगा। पवित्र और पुण्य खिल्यायान तीर्थ पर मनुष्य स्नान, दान तथा जप पूजा करें तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

तत्र नारायण देवमर्चयिच्च जगद्गुरूम्। अनन्तभोगमोक्षेष्ट साधनं विश्वव्यापिनम्।।

स्नात्वा तत्क्षेत्रपुण्योदे दानं दत्वा स्वशक्तितः। महाबने भीमरूपं विघ्नेशं समुपाश्रयेत्।।

उस बालखिल्य तीर्थ पर जगद्‌गुरु सर्वव्यापी नारायण का पूजन करें जो कि नाना प्रकार के भोगों तथा मोक्ष के प्रदान करने वाले हैं। तीर्थ पर स्नान और यथाशक्ति दान देकर महावन (गणेशबल) (गणेशबल पहलगाम में हैं) में श्री गणेशजी का पूजन करें।

नत्वा हुत्वा च विधिवन्मोदकैः पायसैस्तथा। बलि निवेदयेद्‌भक्तया श्री गणेशाय सुन्दरि !।।

हे सुन्दरी ! श्री गणेशजी को नमस्कार करके लड्‌डुओं तथा क्षीर का भोग लगावे।

मामलेश्वर तीर्थ की उत्पत्ति की कथा

प्रशान्तपापविघ्नोऽथं क्षेत्रं मामेश्वरयं ब्रजेत्। दृष्टवा मामेश्वरं लिंगं स्नात्वा मामेश्वारिणि।।
तत्क्षणान्मुच्यते साध्वि रोगेभ्यः पाप सञ्चयात्। हुत्वा दत्वा च विधिवत् ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः।।

पाप तथा विघ्नों से रहित होकर मामेश्वर (मामलेश्वर) क्षेत्र को जावे

हे साध्वी ! मामलेश्वर भगवान के दर्शन या तीर्थ जल में स्नान करके मनुष्य रोगों तथा पापों से छूट जाता है। यहां पर स्नान करने के पश्चात मनुष्य दान करे तथा ब्राह्मणों को भोजन करवायें।

मामलेश्वर तीर्थ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कथा सुनो–

एक समय भगवान श्री सदाशिव श्री गणेश जी को दोनों ड्योढ़ियों का द्वारपाल बनाकर आप स्थलबाद को चले गये थे। वहां पर थोड़ी देर ठहर कर खिल्यायन से ऊपर दण्डक मुनि के आश्रम जाकर विश्राम करने लगे। वहां देवता आये। भगवान सदाशिव ने कहा -"आगे मत बढ़िये।" इस शब्द को सुनकर गणेश जी पाताल देश से आए और उन्होंने भी यही शब्द कहे और इस शब्द से फिर देवता भगवान श्री सदाशिव मे लीन हो गए। अतः फिर यह ग्राम 'मामल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भगवान श्री

सदाशिव ने श्री गणेश जी से कहा तुम "मामल" शब्द सुनकर पाताल से यहाँ आये हो अतः दीर्घकाल तक यहाँ ठहरो और समस्त विघ्नों को दूर करो।

य: कश्चिन्मानवो लोके अत्र त्वां पूजयिष्यति। सर्वान् विघ्नान विनिर्जित्य सिद्धि समधिच्छति ।।
इति दत्वा वयां देवो गणेशाय स्वयं शिव:: । पुष्येवै दन्डकारण्ये लीनो मामेश्वर: प्रभु: ।।

जो मनुष्य यहां पर तुम्हारा पूजन करेंगे वह परम सिद्धि को प्राप्त करेंगे। यह वरदान श्री सदाशिव जी श्री गणेश जी को देकर दण्डकारण्य में अर्न्तध्यान हो गए।

दृष्टवा मामेश्वरं लिंगं पुण्ये मामलके नर: । पूजयित्वा गणपतिम् अश्वमेघफलं लभेत् ।।
सर्वान्कामानवाप्नोति पशुपुत्रधनानि च। यात्रा साफल्यमाप्नोति गणेशस्य प्रसादत: ।।

मनुष्य को पवित्र मामलक(ग्राम) में मामेश्वर का दर्शन करने और श्री

गणेश जी का पूजन करने से अश्वमेध का फल मिलता है। श्री गणेश जी की कृपा से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण होकर उसे पशु, पुत्र तथा धन की प्राप्ति होती है और उसकी यात्रा भी सफल हो जाती है।

भृगुपति तीर्थ

ततो ब्रजेद्भृगुपते: क्षेत्र सर्वमलापहम्। स्नात्वा दत्त्वा च विधिवत्तत्र सम्पूजयेद्धरिम्।।

इसके पश्चात समस्त पापों को मिटाने वाले भृगुपति तीर्थ जाकर वहाँ विधिवत स्नान तथा दान करके भगवान श्री हरि का पूजन करें।

नोट–भृगुपति तीर्थ (पहलगांव में डाक बंगला के समीप है)

भृगुजी ने परिशीलन वन में दीर्घकाल तक बड़ा भारी तप किया था। ऐसा कठिन तप जो देवता भी न कर सकते थे। इसी बीच में भगवान

श्री विष्णु देवताओं के साथ महर्षि भृगुजी के दर्शनों के लिए आये। भृगुजी ने अपने आसन पर से उठकर उनको प्रणाम किया और सदैव एक रस रहने वाले भगवान श्री विष्णु ने उनके सिर को चूमकर उनको गले से लगा लिया।

आलिंगितुरन्योन्यं भृगु विष्णु महेश्वरि !। तद्अंगजात प्रस्वेद जलैः परमपावनैः ।।
पुण्यतीर्थम् भूद्देवि ? परिशील बने शुभे। भृगोरालिंङ्ग नाद्यस्माद्धरि स्वेद समुद्‌भवम् ।।
पुण्यं सुप्रथित लोके भृगुतीर्थ महेश्वरि ! तत्र स्नात्वा ताम्रदानं वस्त्रदानच्च मानवः ।।
करोति सफला यात्रा तस्य सत्यन्न संशयः । भृगुतीर्थे नरःस्नात्वा पुण्य प्राप्नोत्यसुत्तमम् ।।

हे माहेश्वरी ! भृगु और विष्णु भगवान ने आपस में आलिंगन किया। उनके शरीर में से पवित्र पसीना निकला जिससे वह पवित्र तीर्थ बना।

श्री सदाशिव बोले--

"हे देवी !" क्योंकि यह तीर्थ भृगु के पसीने से बना है अतः इसका नाम भृगु-तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। यहाँ पर जो मनुष्य स्नान करके ताँबे तथा वस्त्र का दान करेगा उसकी यात्रा निसन्देह सफल होगी। वह मनुष्य स्नान करने से अति उत्तम पुण्य को प्राप्त होता है।

श्री लम्बोदर की कथा

एक बार कैलाश पर्वत पर भगवान श्री सदाशिव और श्री पार्वती ज्ञान सम्बन्धी बातचीत कर रहे थे। उन्होंने श्री गणेशजी को द्वारपाल बनाकर उनसे कह रखा था कि किसी को अन्दर मत आने देना। इतने में देवराज इन्द्र देवताओं सहित वहां आया। गणेश जी ने उनको रोका इस पर दोनों में बड़ा भारी युद्ध हुआ। इन्द्र हार गया--

इन्द्र कोषाद् गणेशो वै तृषितः क्षुधितोऽपिच। भुक्तास्वादु फलान्यत्र पयो गंगा सपुष्कलाम्।।
पीत्वा गंगासि विघ्नेशस्तदा लम्बोदरोऽभवत्। लम्बोदरेति नाम्तो वै आजुहाव हस्तदा।।

इन्द्र के साथ लड़ने से श्री गणेश जी को बहुत ज्यादा भूख व प्यास महसूस हुई। चुनांचे बहुत स्वादिष्ट फल खाकर बहुत सा गंगाजल पीने से श्री गणेश जी का पेट बढ़ गया। तब भगवान श्री सदाशिवजी श्री गणेश जी को लम्बोदर के नाम से पुकारने लगे।

शुष्कां द्रष्ट्वा तु गंगा तां हरो गणपतेः प्रिये!। क्रोधेनाष्युदरन्तस्याऽहनडुमरुण शिवे!।।
अवमन्मुखतो गंगा तदा गणपतेः प्रिये। यस्माल्लम्बोदरात्तस्य आह्नवीसा विनिःसृताः।।
लम्बोदरी जल स्पर्शः कोटि जन्माघनाशनः। करणीयो महादेवि! मामलेशस्य सन्निधौ।।

हे देवी! भगवान श्री सदाशिव ने गंगा को सूखा हुआ देख श्री गणेश जी के पेट पर, क्रोध में भरकर डमरू से चोट की। फिर गंगा उनके पेट में से निकालकर बहने लगी और पौराणिक कथाओं ने उसका नाम लम्बोदरी प्रसिद्ध किया।

हे प्रिय! लम्बोदरी नदी के जल का स्पर्श कोटि जन्मों के पापों का नाश करता है। इसीलिए मामलेश्वर के पास इस नदी का स्पर्श करना आवश्यक है।

ततो गत्वा रञ्जिवने पश्येद्वर्तुलाकारकोपलम्। स्नानं कृत्वा ततः सीताराम लक्ष्मण कुण्डके।।

इसके पश्चात् रन्जिवन में गोलाकार पत्थर की देव मूर्ति का दर्शन करे और वहां से सीताराम कुण्ड में स्नान करके आगे बढ़े।

रम्जनोपल की कथा

रंजनाख्यं तदा प्राप्य बनं दैत्यान्मोदोत्काटनः। विचरन्तो बनं पुण्यं रामः सीता च लक्ष्मणः।।
तान दृष्ट्वा स्वेदसंयुक्ता बभूबू रंजने बने। तत्स्वेदजलसम्भूताः कुन्डस्तत्र शरानपि।।

सीता, लक्ष्मण तथा राम ने विचरते-विचरते रम्ज्नख्य पवित्र वन में आकर मदयुक्त राक्षसों को देखा। इससे उनको पसीना आ गया वह पसीना कुण्डों में पड़ने से यह कुन्ड परम पवित्र हो गये।

गृहीत्वाऽश्गनि चारुह्य चकर्त दैत्यपुंगवान्। शेषा भीता: पलायन्ते रामचन्द्र शरार्दिता:।।
तद्रक्तपाताद्रक्त: स: गण्डशैलो ह्यनुत्तम:। रामपादरबिन्दस्य स्पर्शनात्पावन: स्मृत:।।

भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज पाषाण पर चढ़कर बाणों से राक्षसों को समाप्त करने लगे। बहुत से राक्षस मारे गये और बाकी के इधर-उधर भाग गये। उन राक्षसों का खून गिरने से वह गंडशैल (छोटी पहाड़ी) रंगीन हो गई और भगवान् श्री रामचन्द्र जी महाराज के चरण स्पर्श से दूसरों को पवित्र करने वाली हो गयी।

पापैर्मुक्तो भवेद्यत्र रंजनीपलदर्शनात्। कुन्डे स्नानञ्च कृत्वाऽत्र पापबन्धात्प्रमुच्यते।।

इस रम्जनोपल के दर्शन से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है और कुन्ड में स्नान करने से समस्त पापों से छूटकर मुक्त हो जाता है।

स्थानु-आश्रम (चन्दनबाड़ी)

ततो गत्वा नीलगंगा तीर्थोऽमवगाह्य च। प्रसन्नचित्तवृत्तिश्च तत: स्थाण्वाश्रमं ब्रजेत्।।

इसके बाद नील गंगा में स्नान करके प्रसन्नचित्त हो स्थानु-आश्रम

(चन्दनवाड़ी) की यात्रा करें।

एकदा क्रीडतस्तस्य शिवस्य वरवर्णिनि !। देव्याः सौरतसंलापैरन्यैः क्रीडनकैरपि ।।
अक्षिणी चुम्बतस्तस्य पार्वत्या वरदायिनि। कालञ्जानाक्तं वदनं समभूतस्य सुन्दरि !।।

हे देवी ! एक बार काम-क्रीड़ा तथा खेल की बातों में भगवान श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों के साथ लग गया। हे सुन्दरी ! तब उनका मुख अंजन (सुरमे) के कारण काला हो गया।

दृष्ट्वांजनअंकितं वदनं स्वं देवो भगवान् हरः। तदा प्रक्षालयामास गंगायो वदनं शिवः ।।
सवै गंगा समुत्पन्ना कालांजननिभाऽभवत्। नीलगंगेति विख्याता महापातक नाशिनी ।।

फिर भगवान् श्री सदाशिव जी ने सुरमे से काला देखकर मुख श्री गंगा जी में धोया, जिससे गंगा जी का रंग काला पड़ गया अतः गंगा का नाम नील गंगा प्रसिद्ध हो गया। यह नदी महापापों को नष्ट करने वाली है।

नीलगंगाजलस्पर्शो दोष संसर्गतोऽसषाम्। स्त्रीणामात्मविकारादीन् नाश स नयतिध्रुवम्।।

नील गंगा का स्पर्श दुष्ट मनुष्यों के साथ रहकर जो दोष प्राप्त हुए हों, उन्हें तथा स्त्रियों के मन के विकारों का नाश करता है इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।

यह नील गंगा पहलगांव से 6½ मील चन्दवाड़ी के मार्ग में है।

पुरा चचार सुमहत् तपो हैमवने नगे। गिरीशो दक्षतनुजा विश्लेषिततनु: शिव:।।
सेवा पराऽस्थिता तत्र चिरं देवी महेश्वरी। न चाचालात्मध्यानाद्धि तपसि स्थाणुसंस्थित:।।

पूर्वकाल में भगवान् श्री सदाशिव दक्षप्रजापति की पुत्री सती का वियोग हो जाने पर हिमालय पर कठिन तप करने लगे। महेश्वरी फिर वहां पर बहुत वर्षों तक सेवा करती रही।

सती ने पर्वतराज के यहां जन्म लेकर पार्वती का रूप पाया। यह तपस्या करने के पश्चात् भगवान सदाशिव की सेवा करने लगीं।

लेकिन उनकी सेवा करने पर भी भगवान श्री सदाशिव की समाधि न खुलने पाई।

वाटिकायां चंदनानं पार्वती ह्याकुलाऽभवत्। स्थाणुवत् संस्थितो यत्र महेशस्तपसि स्थितः।।
स्थाण्वाश्रम इति प्रोक्तो महापातकनाशनः। स्थाण्वाश्रम समीपे तु यः स्नायात् सुखन्दिते !।।

तब श्री पार्वती जी चन्दन वाटिका में बड़ी घबराई। जिस वाटिका में भगवान श्री सदाशिव वृक्ष के समान निश्चल रूप से तप में स्थित थे। उस वाटिका का नाम बाद में महापाप विनाशक प्रसिद्ध हुआ। हे देवी ! इस स्थानु आश्रम (चन्दनवाड़ी) के पास जो स्नान करता है वह शिव-धाम को प्राप्त होता है।

महापातकयुक्तो वा युतो वा ह्यपपातकै। स्थाण्वाश्रंमवने पुन्ये मुच्यते सर्वकिल्विषैः।।
अत्र देवार्चन कुर्वन् तिलतर्पणमेव च। जपशंच मुच्यते जन्तुमहापातक कोटिभिः।।

ब्रह्म हत्या तथा गौ हत्या आदि महा पाप करने वाला मनुष्य

यदि चन्दनवाड़ी में स्नान करे तो समस्त पापों से छूट जाता है।

सरस्वती नदीं दृष्ट्वा स्नात्वा पापात्प्रमुच्यते। ततश्चोषसि पोषाख्यं गिरिमुलंघय पावनम्।।

सरस्वती नदी का दर्शन करने से एवं उसमें स्नान करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इसके पश्चात् यात्री को पौषाख्य पर्वत (पिस्सू घाटी) पर चढ़ना चाहिए।

पिस्सू घाटी

एक बार देवता और राक्षस भगवान श्री सदाशिव के दर्शनों के लिए आए। वह पहाड़ पर चढ़ते समय ईर्ष्या में ग्रस्त होकर कहने लगे कि हम पहले चढ़ेंगे! दोनों में युद्ध होने लगा। राक्षसों से हटकर देवताओं ने एकाग्रचित्त होकर भगवान श्री सदाशिव का ध्यान किया।

शम्भोरनुग्रहाद देवि! पिष्ठा दैत्या सुरोत्तमैः। मुष्टप्रहारैः पिष्टास्ते राक्षसा यत्र सुन्दरि!।।

लीनागिरौ भवन्ति स्म: यत्र ते राक्षसा: प्रिये !। दैत्यदेहास्थिसंभूता तत्र राशि: सुविस्तरा।।

प्रिय ! भगवान श्री सदाशिव जी की कृपा से देवताओं ने राक्षसों को मार-मारकर चूर्ण कर दिया। जिस स्थान पर देवताओं ने राक्षसों का चूर्ण बनाया, वहाँ पर उनकी अस्थियों का एक बहुत बड़ा ढेर लग गया।

स गिरि: परमोद्धार पोषाख्य: प्रथितो भुवि। पिनिष्ट शिवभक्तानां पापरूपांस्तु राक्षसान्।।
श्री श्री श्री श्री शितीकण्ठ इमं मन्त्र मनुस्मरन्। स ब्रह्मसदनं याति यत्र गत्वा न शोचते।।

और यह पर्वत, यानि पिरसू घाटी, अब शिव भक्तों के पाप-ताप हरती है। हे देवी ! ''श्री-४ शितीखण्ड'' इस मन्त्र को स्मरण करता हुआ जो इस पहाड़ पर चढ़ता है उसको ब्रह्मलोक प्राप्त होगा। वह ब्रह्मलोक जहाँ पर कि पाप-ताप व शोक का नाम तक भी नहीं है।

तदुपरि च शेषस्य नागस्य विधिपूर्वकम्। दर्शनं स्पर्शनं पूजां कृत्वा गच्छेदत: परम्।।
वायुवर्जन देशे तु विधाय मटिकां तत:। तत्राश्रमपदे स्थित्वा संस्मरेदमरेश्वरम्।।

इस पिस्सू घाटी पर विधिवत श्री शेषनाग का दर्शन कर पूजन करके आगे बढ़ें।

वायुर्जन में पत्थरों से छोटी मढ़ी बनाकर भगवान श्री अमरेश्वर का स्मरण करें।

शेषनाग पर्वत

प्राचीन काल में इस पहाड़ पर एक बड़ा ही बलवान राक्षस वायु के समान रूप वाला रहता था और वह यहां आने वाले देवताओं को बड़ा कष्ट पहुँचाता था। देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के पास गये। स्तुति के पश्चात् भगवान श्री सदाशिव जी प्रसन्न हुए। देवताओं ने उनको राक्षस के सम्बन्ध में बताया। भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने कहा कि मैंने इसको वरदान दिया हुआ है जिससे मैं इसको नहीं मार सकता। तुम भगवान श्री विष्णु की शरण में जाओ। इस पर देवताओं ने क्षीर सागर

के तट पर जाकर भगवान श्री विष्णु की स्तुति की। भगवान श्री विष्णु देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर बोले मैं अभी-अभी वायु रूपी दैत्य को नष्ट किये देता हूँ। तुम लोग स्वर्ग धाम को जाओ। शेषनाग जी पाताल से प्रकट हुए। उस पर भगवान श्री विष्णु सवार हुए और आज्ञा दी—

वातं पित्रफणीन्द्र ! त्वं सहस्त्रवदनो लघु। प्राणांस्तर्पय नागेश ! यतस्त्व पवननाशन: ।।
एवं भगवत श्रुत्वा वचनं चामृतोपमम्। प्रादुर्भूय च त दैत्यं वायुरूपं पपौ क्षणात्।।

हे सर्पराज ! तुम सहस्त्र मुखों से वायु का पान करो। अपने प्राणों को इस वायु द्वारा तृप्त करो, क्योंकि तुम वायु के खाने वाले हो। भगवान के अमृत रूपी वचन सुनकर एक क्षण में शेषनाग ने देखते ही देखते वायु रूपी दैत्य को भक्षण कर लिया।

तदा प्रभृति देवेशि ! नगोऽभूच्छेषपंकज: । स्वाश्रमेणा प्यासौ नागोवर्णितो योगिसत्तमै: ।।
दर्शनात स्पर्शनाद स्नानात दानाद्धोऽमाज्जपात्तथा। स्वाध्यायस्तुतिपाठच्च ह्यनन्तपुण्यमाप्नुयात्।।

हे देवी ! उस दिन से ये पर्वत शेषनाग के नाम से प्रसिद्ध है। तथा योगी जन इसको अपना आश्रम भी कहते हैं। इसके दर्शन करने से तथा तालाब में स्नान करने से और यहां पर जप, हवन, स्तुति का स्वाध्याय करने से मनुष्य अनन्त पुण्य को प्राप्त होता है।

जब देवताओं ने राक्षसों को मार डाला तब उनमें से प्रष्टता नाम दैत्य वायु में मिलकर देवताओं को कष्ट देने लगा। इस पर समस्त देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के पास गए और उनकी स्तुति की। इस पर भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने प्रसन्न होकर कहा।

मठिकांसु च देवेशाः ! कुरुध्वं वायुवर्णनम्। इत्यं कृत्वा ततो देवा मठिकास्तत्र प्रस्तरैः।।
दर्शयामास तच्चोग्रं रूपं दैत्यपुरन्दरः। दृष्ट्वा दैत्यं तृग्ररूपं वज्रमिन्द्रः समादधे।।

हे देवताओ ! तुम लोग यहां मढ़िएं बनाकर वायु को रोक दो। इस पर वे वहां पर पत्थर की मढ़ियां बनाकर शान्तिपूर्वक रहने लगे। लेकिन

एक बार दैत्य ने अपना उग्र रूप दिखाया। तब देवराज इन्द्र ने अपना वज्र उठाया।

जथान दानव देवस्तत्रैव वाजुवर्जने। तद्वायुवर्जन नाम तीर्थभूतं सुचर्चितम्।।
मठिकारचनातत्र पाषाणैर्द्रेवतार्थयः। अनन्त पुण्य मात्नोति वायुवर्जदर्शनात्।।
महापातकयुक्तो वा युतो या चोपापतकैः। मुच्चते पातकैर्घोयैर्दृश्ट्वा या वायुवर्जनम्।।

और उसी जगह राक्षस को मार डाला। तब से यह जगह वायुवर्जन देवताओं से पूजित तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। यहां पत्थरों द्वारा देवताओं के लिए छोटे-छोटे घर बनाने तथा तीर्थ के दर्शन से मनुष्य अत्यन्त पुण्य को प्राप्त होता है। ब्रह्म हत्या और गौ-हत्या से युक्त मनुष्य इस तीर्थ के दर्शनों से इन महापापों से छूट जाता है।

हत्यारा तालाब

श्रवण शीले! प्रवक्ष्यामि शुष्कीभूतं सरोवरम्। येन विज्ञातमात्रेण नरो मुच्येत संशयात्।।

हे देवी! जिस कारण यह तालाब (हत्यारा तालाब) सूख गया है वह

सुनो। इसके सुनने से प्राणी संशय से रहित हो जाता है।

जब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज तथा देवराज इन्द्र ने राक्षसों को नष्ट किया तो कुछ राक्षस भागकर इस तालाब में छिप गए और फिर वह राक्षस थोड़े समय के पश्चात्, देवताओं को पूर्ववत् दुःख देने लगे। भगवती पार्वती और सदाशिव जी महाराज विचरते हुए वहां आए। भगवती पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से देवताओं के दुख दूर करने के लिए कहा। भगवान श्री सदाशिव महाराज ने हुँकार किया, फिर वह डर कर इस तालाब में छुप गए। भगवान श्री सदाशिव महाराज ने शाप दिया। वह तालाब सूख गया। इस स्थान पर यात्रियों को मौन होकर यात्रा करनी चाहिए।

ततः पंचतरंगिण्या पंचस्रोतस्तु सुन्दरि !।। स्नात्वाद्देवर्षिपितृंश्च तर्पयेत्सुसमाहितः ।।

हे सुन्दरी ! इसके बाद पंचतरपिणी (पंचतरनी) के पंचप्रवाहों में स्नान

करे और देवता ऋषि तथा पितरों का सावधान होकर तर्पण करें।

पंचतरनी गंगा

ऐकदा-पुराताण्डव-नृत्यमानस्य भूपतेः। प्रमोदाधिक केशस्य कपर्दः शिथिलाऽभवत्।।

तदोपै पंचका देवी प्रादुर्भूता कपर्दतः। गंगा भगवती देवी महापातकनाशिनी।।

पूर्व काल में एक बार भगवान श्री सदाशिव महाराज ताण्डव-नृत्य कर रहे थे और नृत्य करते समय उनका जटाजूट ढीला हो गया और उसमे फिर पंचतरनी गंगा निकली जो महापापों को दूर करने वाली है।

जो मनुष्य आलस्य रहित इस पंचतरनी नदी में स्नान करता है, वह ब्रह्म-हत्या आदि घोर पाप से मुक्त हो जाता है। यहां पर स्नान करने वालों को वही फल मिलता है जो कुरूक्षेत्र, प्रयाग, नैमिषारण्य में स्नान तथा दान करने से प्राप्त होता है।

गौहिरण्यं सुवासश्च क्षोमं चन्दननेव च। कुंकुमागुरूकर्पूरमृगाभ्यादि सुन्दरिः!।।

यो ददाति सुविप्रायः स शिवलोकमाप्नुयात। आरूहेदुच्च शिखरं ततो डमारक श्रयेत्।।

हे सुन्दरी! यदि इस तीर्थ पर गऊ, वस्त्र, चन्दन, केसर, अगर, कस्तुरी आदि ब्राह्मण को दान दिए जायें तो यात्री को शिवधाम की प्राप्ति होती है। इसके पश्चात् ऊँची चोटी वाले पहाड़ पर चढ़ कर डमारक देवता के दर्शन करने चाहिए।

डमारक देवता की कथा

महापातक युक्तो वा युतो ब्रह्मपातकै। पुन्यं डामरक दृष्ट्वा मुच्चते पापकोटिभिः।।
बहुनात्र किमुक्तेन पूजा प्रक्रमण तथा। कृत्वामरेश्वरस्यैव दर्शनार्होभवेत्पुमान्।।

बड़े से बड़ा पापी भी डमारक देवता के दर्शन करने से पापों से छूट जाता है। हे देवी! अधिक क्या कहूँ? बस इतना कहना ही पर्याप्त है कि यात्री डमारक देवता की पूजा तथा परिक्रमा करने से ही श्री अमरनाथ के दर्शन योग्य होता है।

एक बार भगवान श्री सदाशिव जी महाराज नृत्य में इतने लीन हो

गए कि उनका सन्ध्या का समय भी व्यतीत हो गया। इससे उनको बड़ी चिन्ता हुई।

तदाप्रभृति देवेशि ! तत्र डमारकोगण: । तस्यौ सन्ध्या वेदनाथं भवस्य सुर पूजिते ।।

एक बार भगवान श्री सदाशिव जी महाराज श्री कार्तिक स्वामी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे कि उक्त गण को निद्रा आ गई और भगवान श्री सदाशिव जी महाराज का सन्ध्या काल व्यतीत हो गया। इससे भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के क्रोध का कोई पारावार न रहा और उन्होंने उक्त गण को श्राप दिया कि वह शिला रूप होकर देर तक वहां ठहरे। वह गण काँपता हुआ भगवान श्री सदाशिव महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ, लेकिन भगवान ने उसको क्षमा नहीं किया लेकिन यह ज़रूर कहा कि जो यहां पर मेरे (श्री अमरनाथ जी के) के दर्शन के लिए आएगा, वह पहले

तुम्हारी पूजा तथा परिक्रमा करेगा।

तदप्रभृति देवेशि! महाडामरको गणः। दृषद्रषोऽभवत्तत्र रत्नपर्वतमूर्धनि।।
यः कश्चिन्मानवो लोके गणै डामरमर्चयेत्। स प्रयाति शिवस्नानमिति सत्यं वदामिते।।

हे देवी! उस दिन से महाडमारक गण रत्न नामक शिखर पर पाषाण रूप होकर रहता है और जो मनुष्य उसका पूजन करता है वह शिवधाम को प्राप्त होता है।

आरूहेद्रत्न शिखरं तक्षडारकं श्रयेत्। श्रावण्यामुषसि शैलशिखरे डामरेश्वरम्।।
भैरवं पूज्ययेद द्रष्ट्वा भक्तायाऽर्थ सुरसुन्दरि! दीपं घृतमयं पुपमोदकान् विन्नवेदयेत।।

यात्री को चाहिए कि श्रावणी के दिन प्रातः काल भैरों घाटी की यात्रा करते हुए चोटी पर डमारक की शरण में पहुँचे। डामरेश्वर भैरव का दर्शन और भक्ति सहित पूजन कर व्रत की जोत जलाये और मालपूओं तथा लड्डुओं का भोग लगाये।

गर्भ-योनि की महिमा

परिक्रम्य च नत्वाय पर्वतादवरोहयेत्। मध्यतस्तत्र गच्छन्वें प्रविभेद्गर्भवासकम्।।
तत्र सकृत्प्रविष्टरस्य न पुनर्गर्भसम्क्ष। तस्मान्निः सृत्य देवेशिप्रपश्येदरमायतीम्।।
यस्या दर्शनमात्रेण मृत्योंऽमर्त्यत्वचप्नुयात्। तद्वार्यमृतकल्पे तु स्नात्वा भूति प्रलेपयेत।।

परिक्रमा और प्रणाम कर पहाड़ से उतरते समय मध्य में चलता हुआ, मार्ग में जो गर्भयोनि है, उसमें प्रवेश करें क्योंकि इसमें एक बार जाने से फिर मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है। गर्भयोनि से निकल कर अमरावती नदी में प्रवेश करें। अमरावती के दर्शन मात्र से मनुष्य देवता तुल्य हो जाता है। इस नदी के अमृत समान जल में स्नान करके यात्री को चाहिए कि भस्म को अपने शरीर पर मले।

यः कश्चिदपि चेशानि ! पुण्यगंगर्भहंश्रयेत्। गर्भात्स मुच्यते जन्तुरिति न वचनं प्रिये।।
यदा कैलाशशिखरे क्रीडतस्तस्य ग्रवतिः। आज्ञया चाभबन्नन्दी द्वारपालो महेश्वरि।।

देवी ! जो मनुष्य पवित्र गर्भयोनि में से निकल कर अमर गुफा को जाता है उसका फिर पुनर्जन्म नहीं होता है और फिर वह शिवरूप हो जाता है। देवी ! यह बात बिल्कुल सत्य है। हे ईशानि ! जब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज कैलाश पर्वत पर नृत्य कर रहे थे, उस समय नन्दी उनकी आज्ञानुसार द्वारपाल था।

देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के दर्शन के लिए आए तो नन्दी ने उनको रोका। अब देवताओं तथा नन्दी में परस्पर युद्ध होने लगा। नन्दी ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से शिकायत की।

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने नन्दी से कहा– तुम दण्ड धारण करो। देवता तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे। तुम द्वार पर चलो और दीवार बनाकर मार्ग में गर्भयोनि को रख दो। देवता उसमें प्रवेश न कर सकेंगे।

इति तस्य वचः श्रुत्वा महेशस्य महागणः। महाप्रस्थं समुत्थाप्य गर्भागारे न्याधीपयत।।
महापावनं छेतू चेदिच्छेत्प्रसभंप्रिये। तदाश्रयेत्तु देवेशं गर्भागारविनिस्मृतः।।

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज की बात सुनकर नन्दी ने गर्भगृह के आगे एक बहुत बड़ा पत्थर रख दिया, जिसमें कि योनि सदृश छिद्र था। हे प्रिये! जो पुरुष जन्मजन्मान्तर के पापों से मुक्त होना चाहे वह गर्भयोनि में से निकल कर श्री अमरनाथ के दर्शन करे।

स्नात्वामरावती नाम्ना नदी परमपावनीम्। तत्पङ्कसितदेहश्चय बहुवस्त्रविवर्जितः।।
प्रलपञ्छिव! पन्थान देहि मे परमेश्वर। तदाऽरोहेत् गिरिवर त्यक्तवा क्रोधादि विक्रयाम।।

फिर अमरावती नदी में स्नान कर,उसी की भस्मरूप कीचड़ को शरीर पर मलकर और उनसे सफेद होकर थोड़े वस्त्र, कोपीन, और रेशमी धोती को पहन कर 'सन्मार्ग प्रदान करो', कहते हुए तथा 'शिव शिव' उच्चारण करते हुए क्रोध, मोह आदि को त्याग कर पहाड़ पर चढ़ें।

प्रणमेद्देवदेवेशं गुहास्थममरेश्वरम्। स्तुयात ह्यनयास्तुत्या भक्तयां तद्गतमानसः।।

मनुष्य गुफा में स्थित अमरेश्वर भगवान (देवताओं के देव भगवान) को नमस्कार करें और प्रभु के चरणों में मन लगाकर भक्ति के साथ इस तरह स्तुति करें :—

दयां कुरू हे दयासागर हर हर शिव शंकर शम्भो। दयां कुरु हे दयासागर हर हर शिव शंकर शम्भो।।
संकटभूधरभेदनिमूदन शशिधरशेखर नरकारे। भवसागर तारक हे त्र्यम्बक! भवभयहरशंकर शम्भो।।
वाह्याभ्यन्तरदोषाणां क्षये तद्दर्शनं नृणाम्। दर्शनात्स्पर्शनाचि पूजनाच्चापिबन्दनात्।।
अमरेशस्य तल्लिङ्ग सत्यं नैवात्र संशयः। महापापकयुक्तानां युक्तनामुपपातकैः।।
सर्वपापापहं नान्यत्सुलभं देस्तरे कलौ। स्नानानीत्थं वितस्तायांषट्प्रोक्तानिपथोन्तरे।।
त्रिंशदन्यत्र यात्रायाममरेश्वरदर्शनि। षट्त्रिशंत्तत्वरूपाणां क्षेत्राणां परतः स्थितः।।
इत्थं सम्पाप्यते शुद्धं शिवधामामृतेश्वरः। एवं कृत्वा नरो यात्रां पश्येद् लिंग रसात्मकम्।।
सयाति शिवसायुज्यं यतो भूयो न जायते।।

सुधालिंग के दर्शनों से मनुष्य के बाहर व भीतर का मैल नष्ट होकर वह शुद्ध या पवित्र हो जाता है। अमृत से बने हुऐ सुधालिंग के दर्शनों

के स्पर्श पूजन तथा बन्दन से महापापी मनुष्य भी समस्त पापों से छूट जाता है। कलयुग में मुक्ति का इससे बढ़ कर दूसरा साधन बिल्कुल नहीं है। वितस्ता (जेहलम नदी) में ६ स्नान और श्री अमरनाथ जी की यात्रा में ३० स्नान हैं। इसके अलावा यहां पर देवताओं के ३६ स्थान हैं उन देवस्थानों के दर्शन करने से मनुष्य को शिवधाम की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यदि मनुष्य यात्रा करता हुआ रसात्मक लिंग के दर्शन करे तो मोक्ष को प्राप्त होता है। जिससे कि उसको फिर बार-बार जन्म मरण का दुःख नहीं भोगना पड़ता।

अमरेश महादेव

इदानी श्रोतुमिच्छामि ह्यमरेशं महेश्वरम्। कथं स ह्यमरेशाख्यो गुहास्थोऽप्यभवत् किल।।
शृणु वक्ष्ये महातीर्थ ह्यमरेशस्य सुन्दरि। यच्छ्रुत्वा प्रविमुच्येत महापातक कोटिभिः।।

पार्वती जी बोली-प्रभो! अब अमरेश महादेव की कथा सुनना चाहती

हूँ और यह जानना चाहती हूँ कि महादेव गुहा में स्थित होकर अमरेश क्यों कर या कैसे कहलाये ?

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने उत्तर दिया—

देवी सुनो ! मैं अब अमरनाथ जी के महातीर्थ के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक कहता हूँ। इसके सुनने से मनुष्य करोड़ों पापों से छूट जाता है।

आदिकाल में ब्रह्मा, प्रकृति, अहंकार, स्थावर (पर्वतादि) जंगल (मनुष्य) संसार की उत्पत्ति हुई। इस क्रमानुसार देवता, ऋषि, पितर, गन्धर्व, राक्षस, सर्प, यक्ष, भूतगण, कुष्माण्ड, भैरव, गीदड़, दानव आदि की उत्पत्ति हुई। इस तरह नए प्रकार के भूतों की सृष्टि हुई। परन्तु इन्द्रादि देवता सहित सभी मृत्यु के वश में हुए थे। देवता भगवान श्री सदाशिव

जी महाराज के पास गए और उनकी स्तुति की। देवताओं ने कहा कि हमको मृत्यु बाधा करती है। आप कृपया कोई ऐसा उपाय बतलायें जिससे कि मृत्यु हम लोगों को बाधा न करे।

श्रुत्वा देववचः सौम्यं महेशः प्रत्युवाच तान्। मृत्युपाय करिष्यामि सहध्वं सुरसत्तमाः।।
गृहीत्वा शिरसस्तत्र हरश्चंद्रकलां स्वयम्। संपीड्य देवानदन्मृत्युभेषजमुत्तमम्।।

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने देवताओं की बात सुनकर कहा—"आप लोगों की मृत्यु के भय से रक्षा करूँगा।" भगवान श्री सदाशिव ने इस तरह कहकर अपने सिर पर से चन्द्रमा की कला को उतारकर निचोड़ा और देवताओं से कहा-'यह आप लोगों के मृत्युरोग की औषधि है।'

सम्पीडनान्निः सुता या च धारा पारमिका प्रिये। सैष भूता नदी पुण्या नाम्ना वै ह्यमरावती।।
ये बिन्दुवश्च्युता देवि ! शरीरेऽस्य महात्मनः। ते भस्मरूपतां प्राप्य च्युताश्चाश्यानतां गताः।।

देवी ! इस चन्द्रकला के निचोड़ने से पवित्र अमृत की धारा बह निकली

और वह धारा अमरावती नदी है। प्रिये ! जो अमृत के बिन्दु चन्द्रकला के निचोड़ते समय भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के शरीर पर पड़े थे वह सूख गए और पृथ्वी पर गिर पड़े। गुहा में जो भस्म है वह अमृत-बिन्दु के कण हैं, जो भगवान जी के चन्द्रकला के निचोड़ने से शरीर पर और बाद में पृथ्वी पर गिरे थे।

प्रेरणा येषां महादेवि। शिवोऽपि द्रम्तामगात्। ते तु द्रष्ट्वा शिवं तत्र द्रवीभूतं महेश्वरि !।।
तुष्टुबुर्वाग्भिरर्थ्याभिः प्रणेमुश्र मुहुर्मुहःश्च। स्वं पुर्नदर्शयामास देवानां हितकाभ्यया।।

हे देवी ! भगवान श्री सदाशिव जी महाराज देवताओं को प्रेम दिखाते हुए द्रवीभूत हो गए। देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज को जल स्वरूप देखकर स्तुति करने लगे और बार-बार नत-मस्तक होकर नमस्कार करने लगे। तब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने पुनः अपना यथार्थ स्वरूप उनको दिखाया।

इसी कारण प्रत्येक पक्ष में अमृत पिघलता और जमता है।

रमोप्यश्यानतां प्राप्य लिङ्गरूपोऽभवत् प्रिये। लिङ्गरूपं हरं बीक्ष्य द्रवीभूत महेश्वरि।।
पुनः पुनः प्रणेमुस्ते भवं कारूणिक परम्। देवांस्तुतिपरानद्रष्ट्वा प्रोवाच सुरसत्तमः।।

देवी ! यह रस (द्रवीभूत) कठिन होकर लिंग रूप में परिवर्तित हो गया। लिंग रूप भगवान श्री सदाशिव जी महाराज को फिर द्रवीभूत हुआ देखकर देवता उनको बारम्बार नमस्कार करने लगे। भगवान श्री सदाशिव ने बड़ी दयायुक्त वाणी से देवताओं से कहा—

हरः परमाया वाचा श्रुणुध्वं देवसत्तमाः। यस्माद्भर्दृष्टं मे हेमलिंग दरीगृहे।।
तस्मान्न मृत्युऽर्युष्मान् वै वाघते मदनुग्रहात्। इहैव ह्यमरा भृत्वा प्रयात शिव रूपताम्।।

हे देवताओ ! तुमने मेरा बर्फ का लिंग शरीर इस गुफा में देखा है। इस कारण मेरी कृपा से आप लोगों को मृत्यु का भय नहीं रहेगा। अब तुम यहीं पर अमर होकर शिव रूप को प्राप्त हो जाओ।

इत: प्रभृति मे लिङ्गं ह्यमरेशाख्यमुत्तमम्। पुण्यं परतरं दवात्रिलोके ख्यातिमेष्यति।।
नत्वा च दण्डवद्देवालिंगं तदमरेश्वरम्। तत: प्रदक्षणीकृत्य स्वं स्वमालयमाययु:।।

आज से मेरा यह अनादि लिंग शरीर तीनों लोकों में अमरेश के नाम से विख्यात होगा।

देवता इस अमरेश्वर महाराज के लिंग शरीर को नमस्कार और परिक्रमा करके अपने-अपने स्थान को चले गये और सत्ता रूप से गुफा में भी रहे।

इति दत्वा वरं देवानमरेशो महेश्वरि!। तदाप्रभृतिलीनोऽभूद्गिरिदर्ध्यन्तरे हर:।।
असां सोमकलां प्राप्त देवानां हित काम्यया। मृत्युनाशं चकराशु तस्माद्वै ह्यमरेश्वर:।।

हे देवी! भगवान सदाशिव देवताओं को ऐसा वर देकर उस दिन से लीन होकर गुफा में रहने लगे। भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने अमृत-रूप सोमकला को धारण करके, देवताओं की मृत्यु का नाश किया, इसलिए तभी से उनका नाम अमरेश्वर प्रसिद्ध हुआ है।

भ्रूणहा गुरूतल्पी च सुरापः स्वर्णहारकः। एनं द्रष्ट्वा महेशानि! ह्यमरेश्वरसंज्ञकम्।।
महापातकयुक्तो यः युतो वा ब्रह्मपातकैः। द्रष्ट्वा रसमयं लिंङ्गं सद्योमुच्येत सुन्दरि।।

हे महेश्वरि! गर्भपात करने वाला, गुरू की शैया पर आरूढ़ होने वाला, मदिरा पीने वाला, स्वर्ण चुराने वाला, गऊ हत्या करने वाला, ब्रह्महत्या आदि करने वाला यदि श्री अमरनाथ जी के रसमय लिंग शरीर का दर्शन करे तो वह उसी क्षण समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

कबूतरों का रहस्य

कपोताः के गणस्तत्र कथ कुत्र स्थिता प्रभो!। वदमे कृपया शम्भो! लोकानां हितकाम्यया।।

भगवती पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी से पूछा- प्रभो! कौन से शिवगण कबूतर हुए हैं और कबूतर क्यों कर हुए हैं और कहां पर स्थित हैं? कृपया यह सब मुझे विस्तारपूर्वक बतलाइये।

भगवान श्री सदाशिव बोले-एक समय भगवान महादेव सन्ध्या समय नृत्य कर रहे थे कि यह गण आपस में ईर्ष्या के कारण 'कुरु-कुरु' शब्द करने लगे। महादेव जी ने क्रोधित होकर उनको यह शाप दिया कि तुम दीर्घकाल तक यही शब्द (कुरु-कुरु) करते रहो। चुनांचि वह रूढ़ रूपी गण उसी समय कबूतर हो गये। इनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

यात्रा का समय

भगवती श्री पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से पूछा-प्रभो! किस समय की यात्रा महाफल देने वाली है ? श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजन से क्या फल प्राप्त होता है? इसके अतिरिक्त वह भी बताइये कि बड़े से बड़ा पापी किस वस्तु का दान करे जिससे कि उसके

समस्त पाप नष्ट हो जायें।

यतः स्वं दर्शयामास श्रावण्यां च हरः स्वयम्। ततश्च कथितायात्रा श्रावण्यां पुण्यदायिनी।।

हे देवी! श्रावणी पर यात्रा करनी बड़े भारी पुण्य को देने वाली है। क्योंकि भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने अपना स्वरुप श्रावण (रक्षा) पूर्णिमा में ही प्रकट किया है।

वाराणस्यादशगुण प्रयागाच्च शत स्मृतम्। सहस्त्रगुणितं देवि! नैमिषात्कुरुजाङ्गलात्।।
तत्पुण्यफलदं प्रोक्तं मया तव प्रियेच्छया। दिव्यं वर्षसहस्त्रन्तु लिंगार्ब्रदपूजनम्।।
सुवर्णपुष्पैः मुक्ताभि, क्षौमैर्वरपटैस्तुयत्। तत्फल समाप्नोति रसलिंगस्य पूजनात्।।

देवी! काशी में लिंगदर्शन तथा पूजन से दस गुणा, प्रयाग से सौ गुणा, नैमिषारण्य तथा कुरुक्षेत्र से हजार गुणा अधिक पुण्य देने वाला श्री अमरनाथ जी का पूजन है। जो कि मैंने तुम्हारे हित के-लिए कहा है। देवताओं

की हजार वर्ष तक सोने, फूल, मोती और पट्ट वस्त्रों से पूजा का जो फल मिलता है वह श्री अमरनाथ के रसलिंग पूजा से एक ही दिन में प्राप्त हो जाता है।

कस्तूरी, कपूर, चन्दन, केसर, मोती, सोना, चांदी, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और अनेक प्रकार की सामग्री से जो मनुष्य भगवान श्री अमरनाथ जी का पूजन करता है उसको बड़ा भारी फल मिलता है। भगवान श्री अमरनाथ जी की आरती और परिक्रमा से भी बहुत पुण्य प्राप्त होता है।

श्री अमरनाथ जी का दर्शन, स्पर्शन करके पंचतरंगिणी के उत्तर संगम में जाकर देव व पितृ प्रसन्नार्थ श्राद्ध करे।

लौटने पर यात्रियों को मामलाख्य महाग्राम में जाकर श्री गणेश जी का पूजन करना चाहिए और वहां गंगा के तट पर खड़ी भगवती जी से, जो भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के सिर पर स्थित है, अपनी यात्रा के सफल होने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पाताल गंगा में स्नान करके यात्रियों को अपने-अपने घरों को वापिस जाना चाहिए।

–इति श्री अमरेश्वर–महादेव–वर्णित अमर कथा–

★★★★★★★★

श्री बूढ़े अमरनाथ की कथा

श्री बूढ़े अमरनाथ स्वामी का प्रख्यात ऐतिहासिक मन्दिर पुंछ से २५ किलोमीटर दूर राजपुर मंडी में स्थित है। प्राचीन ग्रंथ राज-तरंगिणी में भी इस महान ऐतिहासिक तीर्थ-स्थल का उल्लेख मिलता है। हिन्दू तथा मुसलमान इस तीर्थ-स्थल को समान रूप से मानते हैं। किंवदंति है कि अनेक आक्रामकों ने इस पवित्र तीर्थ-स्थल पर आक्रमण करके इसे नष्ट करने की कोशिश की लेकिन वे सभी प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होकर अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। क्षेत्र के मुसलमानों का कहना है कि एक बार जब पाकिस्तानियों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था तो उनके कब्जे के डेढ़ वर्ष की अवधि के दौरान इस मंदिर के साथ बहने वाले झरने का पानी सूख गया था लेकिन जैसे ही भारतीय सेना ने पाक आक्रमकों का कब्जा हटाया,

भगवान शिव ने चमत्कारिक ढंग से झरने को फिर पानी से लबालब कर दिया।

यह मंदिर, जो कि वर्षों तक भूमि में दबा रहा, इसके पता लगाने का श्रेय महारानी चंद्रिका (महारानी लोरन) को है, जो भगवान शिव की कट्टर भक्त थीं तथा प्रतिवर्ष श्री अमरनाथ की यात्रा पर आया करती थीं। किन्हीं कारणों से वह एक बार यात्रा को नहीं आ सकीं। इस पर उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया। महारानी लोरन की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने एक साधु के रूप में उन्हें दर्शन दिए तथा कहा कि वह लोरन नदी से तीन किलोमीटर दूर नीचे की तरफ जाकर भगवान शिव के दर्शन पा सकती हैं। साधु के नेतृत्व में अपने हजारों अनुयायियों के साथ महारानी मंदिर के वर्तमान स्थल पर पहुंची, जो कि धरती में काफी दबा हुआ था और इसके इद-गिर्द उगे वनस्पतियों के कारण दिखाई नहीं देता था। इस पवित्र स्थल पर पहुंच

कर महारानी तथा श्रद्धालु भाव-विभोर होकर प्रार्थना में खो गए और इसी बीच नाटकीय ढंग से साधु वहां से गायब हो गया। लोगों ने उसे तलाशने की बहुतेरी कोशिशें कीं, लेकिन असफल रहे। अतः समझा जाने लगा कि वह साधु कोई और नहीं बल्कि साधु वेशधारी स्वयं भगवान शिव ही थे। तभी से इस मंदिर का नाम बूढ़े अमरनाथ स्वामी पड़ गया।

एक किंवदंति यह भी है कि महाभारत काल में पांडवों ने यहां १३ वर्ष व्यतीत किए। स्थानीय लोगों की यह मान्यता भी है कि भगवान शिव ने पार्वती जी को इसी स्थान पर अमर कथा सुनाई थी।

शिवजी के त्याग की स्तुति

धन धन भोला नाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में, तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में

जटा–जूट का मुकुट शीश पर गले में मुण्डों की माला
माथे पर छोटा सा चन्द्रमा कपाल का कर में प्याला
जिसे देखकर भय व्यापे सो गले बीच लिपटा काला
और तीसरे नेत्र में तुम्हारे महाप्रलय की है ज्वाला
पीने को हर वक्त भंग और आक धतूरा खाने में
तीन लोक.............

चर्म शेर का वस्त्र पुराना बूढ़ा बैल सवारी को
तिस पर तुम्हारी सेवा करती धन-धन गौर बिचारी को
वह तो राजा की बेटी पर ब्याही गई भिखारी को
क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सरदारी को
सुनी तुम्हारे ब्याह की लीला भिखमंगों के गाने में
तीन लोक.............

नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नंगा
याहि ते शोभा पाई जो विराजती सिर पर गंगा
भूत प्रेत बैताल साथ में, यह लश्कर सबसे चंगा
तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा
यही मुझे बतालाओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में
तीन लोक.......

यह तो सगुण का स्वरूप है निर्गुण में निर्गुण हो आप
पल में प्रलय करो छिन में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप
किसी का सुमरिन ध्यान न तुमको अपना ही करते हो जाप
अपने बीच में आप समाये आपी आप में रहे हो व्याप
हुआ मेरा मन मगन ये सिठनी ऐसी नाथ बनाने में
तीन लोक.............

कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन
अपने तन पर खाक रमाई नागों के पहिने भूषन
भुक्ति मुक्ति के दाता हो मुक्ति भी तुम्हारे गहे चरण
देवीसिंह कहे दास तुम्हारा हित चित से नित करे भजन
बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जबाँ हिलाने में।
तीन लोक............

शिवजी का निर्गुण ध्यान

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धन को धरें खजाने में, सारी वसुधा बाँट दी मशहूर है यही जमाने में

राई भर चांदी नहीं सोना हीरे मोती लाल नहीं
जिब्हा से सब कुछ देदें जिससे वह हो कंगाल नहीं
विभूति में जो कुछ उनके वह कुबेर घर माल नहीं
दीन के ऊपर दया करें कोई ऐसा दीनदयाल नहीं
भागीरथ को गंगा दे दी मुक्ति मिली नहाने में
सारी वसुधा.......

वेद न जाने भेद कुछ उनका पुरान पावे पार नहीं
शास्त्र न जाने गति कुछ उनकी शिव सा कोई अपार नहीं
जहाँ पर है उनका आसन वहाँ किसी का विस्तार नहीं
रवि शशि अग्नि पवन भी तो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं
निर्गुण में तो ब्रह्म वो ही हैं सगुण है लिंग पुजाने में
सारी वसुधा........

तीन लोक के बीच में कोई नहीं है ऐसा वरदानी
कोई नहीं योगी ऐसा और नहीं ऐसा ध्यानी
भिक्षुक वेष न देखो उनका वह स्वरूप है निरवानी
सर्प न लिपटे जानो तन में यह तो भक्त सब है ज्ञानी
खुले आँख जब भीतर की तब आवे दर्शन पाने में
सारी वसुधा.......

निन्दा में स्तुति करे तो इसी में वह होते हैं मगन
रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उल्टा है चलन
प्रेम से उनको गाली दो तो उसी को समझे हैं भजन
जो कोई उनको जहर चढ़ावे उसी को वो देते अन्न धन
और कुछ उनको ख्वाहिश नहीं वह मगन हों गाल बजाने में
सारी वसुधा.......

शीश न उनके लिंग न उनके चरण न उनके औ अब है
ऐसा कोई विरला जन जाने उसे नहीं फिर व्यापे भय
देवीसिहं यह कहे अरे नर कह तू मुख से शिव की जय
बनारसी जय जय करने से शिव स्वरूप में हो गया लय
राजा हिमाचल दंग हो गये पारवती को ब्याहने में सारी वसुधा बांट दई......

शिवजी का बांटना

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक इक पल भर में
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी
विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी
कुबेर को सारी वसुधा का कर दिया तुमने भण्डारी
अपने पास पात्र नहीं रक्खा रक्खा तो खप्पर कर में
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में
अमृत तो देवतों को दिया और आप हलाहल पान किया
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया
भागीरथ को गंगा दे दी सब जग ने स्नान किया
बड़े बड़े पापियों का तुमने एक पल में कल्याण किया
आप नशे में चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में
रावण को लंका दे दी और बीस भुजा दश शीश दिये
रामचन्द्र को धनुष बाण वो तुमही ने जगदीश दिये
मनमोहन को मोहनी दे दी और मुकुट तुम ईश दिये
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तों को विश्वाबीस दिये
अपने तन पर वस्त्र न राखो मगन रहो बाघम्बर में
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में
नारद को दई बीन और गंधर्वों को राग दिया
ब्राह्मण को दिया कर्मकाण्ड और संन्यासी को त्याग दिया
जिस पर तुम्हारी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया
देवीसिंह कहे बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया
जिसने पाया उसी ने दिया महादेव तुम्हारे वर में
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में

जय गौरीशंकर उमापते

जय गौरी शंकर उमापते, कैलाशपते जय शिव जै शिव
जय महादेव जय चन्द्रमौलि, जय श्रीशंकर जय शिव जै शिव
जय मृत्युञ्जय भोलेश्वर जय योगेश्वर जय शिव जै शिव
जय पार्वती-पति परमेश्वर, जय कामारि जय शिव जै शिव
जय गंगाधर त्रिपुरारि विभो, जय भवहारि जय शिव जै शिव
जय आशुतोष जय महाकाल, कालहुके काल जय शिव जै शिव
जय ओंकारेश्वर रामेश्वर, जय बैजनाथ जय शिव जै शिव
जय जय अविनाशी जय शम्भो, जय विश्वनाथ जय शिव जै शिव
जय त्रिगुणातीत महेश्वर जय निर्विकार जय शिव जै शिव
सिर नाई जोरि कर विनती है, स्वीकार करो जय शिव जै शिव
मम हृदय विराजो भक्ति देहु, सब पाप हरो जय शिव जै शिव
मेटो ८४ का चक्कर, कर जन्म सफल जय शिव जै शिव

शरणागत हूँ नाथ मैं, करो मेरी प्रतिपाल।
त्राहि त्राहि अशरण शरण, शम्भो होहु दयाल।।

।। श्री शिव चालीसा ।।

दोहा : जै गणेश गिरिजा सुवन मंगल मूल सुजान। कहत अयोध्यादास तुम, देउ अभय वरदान।।

जै गिरिजापति दीन दयाला।
सदा करत संतन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके।
कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर शिर गंग बहाये।
मुण्ड माल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै।
छवि को देख नाग मुनि मोहै।।
मैना मातु की है दुलारी।
वाम अंग सोहत छवि भारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नंदीगण सोहत हैं कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक स्याम और गण राऊ।
या छवि को कहि जात न काऊ।।

देवन जबही जाय पुकारा।
तब ही दुःख प्रभु आप निवारा।।
कियो उपद्रव तारक भारी।
देवन सब मिल तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायउ।
लव निमेष महँ मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा।
सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहिं कृपा करि लीन्ह बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी।
करी तपस्या सकल पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं।
सेवक अस्तुति करत सदाहीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।

प्रगटी उदधि मंथन में ज्वाला।
जरत सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहं करी सहाई।
नील-कण्ठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा।
जीत कै लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई।
कमल नयन पूजन चहं सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर।
भये प्रसन्न दिए इच्छित वर।।
जय जय जय अनन्त अविनाशी।
करत कृपा सबके घट वासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं।
भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारौ।
यहि अवसर मोहि आन उबारौ।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारौ।
संकट से मोहि आनि उबारौ।।
मात पिता भ्राता सब होई।
संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी।
आय हरहु अब संकट भारी।।
धन निर्धन को देत सदा हीं।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं।।
स्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन।
विघ्न विनाशन मंगल कारन।।
योगी यती मुनि ध्यान लगावैं।
शारद नारद शीश नवावैं।।
नमो नमो जय नमः शिवाये।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।।
जो यह पाठ करे मन लाई।
तापर होत हैं शंभु सहाई।।
ऋनियाँ जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करै सो पावन हारी।।
पुत्र हीन कर इच्छा कोई।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावै।
ध्यान पूर्वक होम करावै।।

त्रयोदशी ब्रत करे हमेशा।
तन नहिं ताके रहै कलेशा।।
शंकर सन्मुख पाठ सुनावै।
मनक्रम वचन जो ध्यान लगावै।।
जन्म-जन्म के पाप नशावै।
अन्त वास शिवपुर में पावै।।
कहै अयोध्या आस तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

दोहा: नित नेम करि प्रातः ही, जो पाठ करे चालीस। ताकी सब मन-कामना, पूर्ण करहिं जगदीश।।
मगसर छठि हेमंत ऋतु, संवत चौंसठ जान। अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्याण।।

शिव-स्तुति

दोहा :- श्री गिरजापति बंदिकर, चरण मध्य शिव नाय। कहत अयोध्यादास तुम, मोपर होहु सहाय।।

कवित्त—नदी की सवारी नाग अंगीकार धारी
नित सन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुण्डमाला धारी सिर सोहै जटाधारी,
वाम अंग में बिहारी गिरिराज सुतवारी हैं।
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशी-पति मदनारी कर शूल-चक्र-धारी हैं।
कला उजियारी लख देव सो निहारी,
यश गावें वेदचारी सो हमारी रखवारी हैं।१।
शम्भु बैठे हैं विशाला भंग पीवे सो निराला,
नित रहै मतवाला अहि अंग पै चढ़ाये हैं।
गले सोहे मुण्डमाला कर लिये डमरू विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाये हैं।
संग सुरभी सुतशाला करै जग प्रतिपाला,
मृत्यु हरैं अकाला शीश जटा को बढाये हैं।
कहै राम लाल मोहि करो तुम निहाल,
अब गिरिजापतिकैलाश जैसे काम को जलाये हैं।२।
मारा है जलन्धर और त्रिपुर को संहारा,
जिन जारा है काम जाके शीश गंग-धारा है।

धारा है अपार जासु महिमा है तीन लोक,
भाल में हैं इन्दु जाके सुख वाको सारा है।
सारा है बात जब खायो हलाहल जानि,
भक्त के अधारा जाहि वेदन उचारा है।
चारों हैं भाग जाके द्वार है गिरीश-कन्या,
कहत अयोध्यादास सोई मालिक हमारा है।३।
अष्टगुरु ज्ञानी जाके मुखा वेदबानी,
शुभ भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करें।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै,
दासन के दास जाके दारिद्र दहा करैं।
चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी,
कहत कवि अनन्दी नाहक जो हहा करै।

जगत रिसाय यमराज को कहा बसाय,
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करै।४।

सवैया– गौर शरीर में गौरी विराजत,
मौर जटा सिर सोहत जाके।
नागन को उपवीत लसै,
कहै अयोध्या शशि भाल में वाके।
दान करै पल में फल चारि,
और टारत अंक लिखे विधिना के।
शंकर नाम निशंक सदा ही,
भरोसे रहै निसिवासर ताके।५।

दोहा :– *मगसर मास हेमन्त ऋतु, छठ दिन हैं शुभ बुद्ध।*
कहत अयोध्या दास तुम, शिव के विनय समुद्ध।।

शिव का स्तवन

जय हे औढरदानी!

जैसे तुम उदार परमेश्वर, तैसी शिवा भवानी,
तुम घट-घटवासी अविनाशी व्यापक अन्तरयामी।
शुद्ध सच्चिदानन्द अनामय अमल अकाम अनामी,
अविदितगति अनबद्ध अगोचर अगुन अनीह अमानी।

अगम प्रमानी तुमहि निगमागम 'नेति',-'नेति' कहि हारे,
सोई तुम भक्तन हित कारन रूप अनेकन धारे।
किए अनुग्रह भाजन प्रभु ने सकल चराचर स्वामी,
परखि प्रीति परबत तनया को आधे अंग बिठायो।

आधो पुरूष अरध नारी को अद्‌भुत रूप बनायो,
दम्पति की यह एकरूपता तुम से जग ने जानी।
आक, धतूर, पात श्रीफल पै तुम रीझत त्रिपुरारि,
चाउर चारि चढ़ाई पदारथ चारि लहत नर–नारि।
आसुतोष! तुम बिन त्रिभुवन में को अति कृपानिधानी,
जाके पद रज के प्रसाद ते सुर सुरपति सुख भोगी।
सोई सर्वस्व अरपि औरन को फिरै, अकिंचन जोगी,
परहित जाचत कर कपाल लै, डारत भीख भवानी।
तुम बिन प्रेत पिशाचनहू को, को मानत निज प्यारे,
वैर बिहाई मोर अहि मूषक निवसत सदन तिहारे।

वृषभ सिंह संग-संग रह पीवत एक घाट पै पानी,
विष विषधर दोषाकर दूषन भूषन कौन बनावै।
कौन आप हलाहल पीकै औरहि सुधा पियावै,
तुम बिन काके कंठ कृपा की लखियत नील निसानी।
कासी बीच मुक्ति-मुक्तामनि कौन लुटावत डोले,
को पशुपति बिन बंध पसुन को पास कृपा करि खोलै।
श्रवन सुनाई कौन तारक मनु तारत अगनित प्रानी,
तुम बिन को अपनावत मो सम कुटिल अधम अभिमानी।
जेहि मारत जग तेहि अहि गन को प्यार करत तुम स्वामी,
लीजै सरन महेश! कृपा करि, चरन नमामि-नमामि।

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनंत अखण्ड अभेद सुवेद बतावैं,
अलख अगोचर रूप महेस कौ जोगि जती-मुनि ध्यान लगावैं।
आगम निगम पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुण गावैं,
बड़भागी नर–नारि सोई जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावैं।
सृजन,सुपालन लय लीलाहित जो विधि हरिहर रूप बनावैं,
एकहि आप विचित्र अनेक सुबेस बनाईके लीला रचावैं।
सुन्दर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं,

बड़ भागी नर-नारी सोई जो साँब सदाशिव कौं नित ध्यावैं।
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं,
परम सुरम्य बसन आभूषन सजि मुनि मोहन रूप करावैं।
ललित ललाट बाल विधु विलसै रतन हार उर पै लहरावैं,
बड़भागी नर-नारि सोई जो साँब सदाशिव को नित ध्यावैं।
अंग विभूति रमाय मसान की विषमय भुजंगनि को लपटावैं,
नर कपाल कर मुण्डमाल गल भालु चरम सब अंग उढ़ावैं।

घोर दिगम्बर, लोचन तीन भयानक देखि कैं सब थर्रावैं,
बड़भागी नर-नारि सोई जो साँब सदाशिव को नित ध्यावैं।
सुनतहि दीन की दीन पुकार दयानिधि आप उबारन आवैं,
पहुंच तहां अविलम्ब सुदारुन मृत्यु को मर्म बिदारि भगावैं।
मुनि मृकंडु सुत की गाथा सुचि अजहुं विज्ञजन गाइ सुनावैं,
बड़भागी नरनारि सोई जो साँब सदाशिव कौं नित ध्यावैं
चाउर चारि जो फूल धतूर के बेल के पात औ पानी चढ़ावैं,
गाल बजाय के बोल जो 'हरहरमहादेव' धुनि जोर लगावैं।
तिनहि महाफल देयं सदाशिव सहजहि भुक्ति मुक्ति सो पावैं,
बड़भागी नरनारि सोई जो साँब सदाशिव कौं नित ध्यावैं।
बिनसि दोषदुःख दुरति दैन्य दारिद्रयं नित्य सुख शाँति मिलावैं,
आसुतोष हर पाप ताप सब निरमल बुद्धि चित बकसावैं।
असरन सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलावैं,
बड़भागी नरनारि सोई जो साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं।
औढरदानी, उदार अपार जु नैकु सी सेवा तें ढुरि जावैं,
दमन अशाँति, समन संकट बिरद विचार जनहिं अपनावैं।
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबही चलि जावैं,
बड़भागी नरनारि सोई जो साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं।

श्री शंकर-शतनामावली

जय महादेव देवाधिदेव, भोले शंकर शिव सुखराशी।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर, जय घुइमेश्वर जय कैलाशी।।
जय गंगाधर त्रिशूलधर शशिधर, सर्वेश्वर जय अविनाशी।
जय विश्वात्मन विभू विश्वनाथ, जय उमानाथ काटो फांसी।।
सर्वव्यापी अन्तर्यामी शिव, रुद्र निरामय त्रयलोचन।
भव भयहारी जय त्रिपुरारी, जय मदन दहन जय दुखमोचन।।
मृत्युँजय आशुतोष अघहर, जय बैजनाथ जय वृषभध्वज।
जय लोकनाथ जय मन्मथारि, जय जय महेश जय मृड जय अज।।
जय गौरि-पति जय चन्द्रमौलि, जय नीलकंठ जय अभयंकर।
त्रयताप हरो सब पाप हरो, हर हाथ जोड़ ठाड़ो किंकर।।
कालहु के काल जय महाकाल, जय चण्डीश्वर जय सिद्धेश्वर।
जय योगेश्वर जय गोपेश्वर, जय निर्विकार जय नागेश्वर।।
जय ब्रह्म- रूप ब्रह्मण्य- देव, जय धूर्जटे अवढर दानी।
जय घोरमन्यु जय ज्ञानात्मा, सबने ही आन तेरी मानी।।
जय जय सुरेश जय गिरिजापति, जय दिशाध्यक्ष जय दिग्वसनम्।
जय विरूपाक्ष कैवल्य'प्राप्त, निर्वाण रूप, जय ईशानम्।।

व्यालोपवीति जय वामदेव, ओंकारेश्वर सब दुःख हरमम्।
हो प्रेमवश्य करुणामय प्रभु, नित भक्तों के आनन्द करणम्।।
जय जय कपर्दि जय स्थाणुँ, जय नर्मदेश जय ब्रह्मचारी।
जय अमरनाथ जय सोमनाथ, जय शूलपाणि जय कामारी।।
बाघम्बरधारी रुण्डधारी, जय श्मशान वासी बाबा।
मधुरति मधुर चण्डाति चण्ड, तेरा स्वरूप भोले बाबा।।
पशुपति सुरपति निर्वाण रूप, जय रवि शशि अनल नेत्रधारी।
है शक्ति कहाँ जो गुण गावें, महिमा है तुम्हारी अतिभारी।।
जय परमानन्द जय चिदानंद, आनन्दकन्द जय दयाधाम।
दुनियाँ से सुनते आये हैं, भक्तों के सारे सभी काम।।

जय नन्दीश्वर जय प्रणतपाल, जय शम्भु सनातन हर हर हर।
पूरण समर्थ सर्वज्ञ सर्व, जय त्रिपुण्डधारी हर हर हर।।
कल्याण रूप और शान्त रूप, ताण्डव के हेतु हे डमरूधर।
हर पाप क्लेश और दोष सभी, त्रयताप दया करके सब हर।।
शरणागत हैं प्रभु त्राहि–त्राहि, निज भक्ति देहु अरु करो अभय।
जो नाम जपै यह प्रेम सहित, उसको नहीं व्यापै कोई भय।।
तेरा नाम मात्र ही जनम जनम, के पाप भस्म कर देता है।
हैं धन्य भाग उस मानव के, इतने नाम नित लेता है।।

हाथ जोड़ विनती करू, क्षमा करो सब चूक। लगी लगन ऐसी कछू रह न सकौ मैं मूक।।
हमें भक्ति प्रभु दीजिये, अहो दया के धाम। सीताराम, सीताराम, सीताराम, सीताराम।।

शिवजी की आरती

जयशिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा– विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।। ॐ हर-हर महादेव
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।। ॐ हर-हर महादेव
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन- जन मोहै।। ॐ हर-हर महादेव
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
[illegible] कर माला धारी।। ॐ हर-हर महादेव

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे।। ॐ हर-हर महादेव
करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुःखहारी जग- पावनकारी।। ॐ हर-हर महादेव
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।। ॐ हर-हर महादेव
त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
भजत शिवानंद स्वामी मनवाँछित फल पावै।। ॐ हर-हर महादेव

यही वो अमर कथा है, जिसको सुनने वाले प्राणी अमर हो जाते थे....
पुस्तक-संसार, १६७, नुमायश का मैदान, जम्मू-१८०००१.